1. **सबका धर्म एक है**

2. **सभी महापुरुष एक मत**

लेखक :

विश्व गुरु परमहंस स्वामी
श्री अड़गड़ानन्दजी महाराज के कृपापात्र
स्वामी बजानन्दजी महाराज

श्री परमहंस आश्रम
ग्राम विनैगा, ए. बी. रोड,
पोस्ट कत्थमिल, टूडा भरका रोड,
शिवपुरी (म.प्र.)

मोबाइल : 9993263843
ईमेल : yatharthsandesh@gmail.com
बेबसाईट : www.yatharthsandesh.com

प्रकाशक :

भारतीय संस्कृति सुरक्षा एवं मानव कल्याण समिति (ट्रस्ट)

श्री परमहंस आश्रम विनैगा
पोस्ट कत्थामिल. ए.बी. रोड,
शिवपुरी (म.प्र.)–473551 भारत
E-mail : yatharthsandesh@gmail.com
www.yatharthsandesh.com, www.yatharthtv.com
Mob. : +91 9993263843, 09412459535

© सर्वाधिकार सुरक्षित - (लेखक के अधीन)

संस्करण –
सन् 2001 से नवम्बर 2009 तक – 5000 प्रतियाँ
दिसम्बर सन् 2009 – 3000 प्रतियाँ
दिसम्बर सन् 1017 – 5000 प्रतियॉ

मूल्य : रू. ४०/-

मुद्रक–
यथार्थ ग्राफिक्स
सूरज विहार, लक्ष्मी बाई मार्ग, रामघाट रोड,
अलीगढ़–202001
E-mail : yatharthgraphics@gmail.com

स्वामी श्री बज्रानन्दजी महाराज

सम्पूर्ण मानव का धर्म एक है, सम्पूर्ण विश्व का मानव एक है,
सम्पूर्ण विश्व का ईश्वर एक है, ईश्वर प्राप्ति का मार्ग एक है,
ईश्वर प्राप्ति का स्थान एक है ''हृदय देश'' इनमें से यदि कुछ भी दो हैं,
तो वह मानव के दु:ख एवं पतन का कारण है।

गुरु-वन्दना

॥ ॐ श्री सद्गुरुदेव भगवान की जय ॥

जय सद्गुरुदेवं, परमानन्दं, अमर शरीरं अविकारी॥
निर्गुण निर्मूलं, धरि स्थूलं, काटन शूलं भवभारी॥

सूरत निज सोहं, कलिमल खोहं, जनमन मोहन छविभारी॥
अमरापुर वासी, सब सुखराशि, सदा एकरस निर्विकारी॥

अनुभव गम्भीरा, मति के धीरा, अलख फकीरा अवतारी ॥
योगी अद्वैष्टा, त्रिकाल द्रष्टा, केवल पद आनन्दकारी॥

चित्रकूटहिं आयो, अद्वैत लखायो, अनुसुईया आसन मारी॥
श्री परमहंस स्वामी, अन्तर्यामी, हैं बड़नामी संसारी॥

हंसन हितकारी, जग पगुधारी, गर्व प्रहारी उपकारी॥
सत्-पंथ चलायो, भरम मिटायो, रूप लखायो करतारी॥

यह शिष्य है तेरो, करत निहोरो, मोपर हेरो प्रणधारी॥

जय सदगुरु.....भारी॥

वन्दना

ॐ जय सद्गुरु देवम्, प्रभु जय सद्गुरु देवम्।
भव भय त्रास विनाशक, सद्गुरु तव चरणम्,
गीता ज्ञान प्रकाशक, हे... शान्ति दूतम्।
शिव, अज, विष्णु नमत नित, सहित सहस बदनम्।
सुर, नर, मुनि के सर्वस, वन्दित तव चरणम्।
हे परमहंस देवम्, ॐ जय सदगुरु देवम्।

योग निष्ठ, जगकर्ता, दुःख हर्ता मेरे, गुरु...
ब्रह्म निष्ठ, जन भर्ता, द्वार खड़ा तेरे,
हे परमहंस देवम्, ॐ जय सदगुरु देवम्।

ब्रह्म निरुपण नित्यं, हर युग कथ सत्यम,
जन मन दोष निवारक सद्गुरु तव चरणम्।।
हे परमहंस देवम्, ॐ जय सद्गुरु देवम्।

निर्मल मन तव आसन, जनहित बपुधारी,
चरितं परमानन्दं, भक्तन सुखकारी।।
हे परमहंस देवम्, ॐ जय सद्गुरु देवम्।

सिंह चलनि वहु सोहत, मुख दुति अति प्यारी,
सबको प्रेम लुटावत, योगी, संसारी।।
हे परमहंस देवम्, ॐ जय सद्गुरु देवम्।

भेद विनाशक देवं, चरितं अति ललितम्।
योग रहस्य सिखावत योगी अवधूतम्।।
हे परमहंस देवम्, ॐ जय सद्गुरु देवम्।

भक्तन हृदय विराजत, ओंकार, रुपम्,
योग शास्त्र निधि ज्ञाता, अविगत गोतीतम्।।
हे परमहंस देवम्, ॐ जय सद्गुरु देवम्।

जन, मन की सब जानत, सकल मुनी भूपम्।
सब विधि दास अनाथम् गावत तव चरितं।।
हे परमहंस देवम्, ॐ जय सद्गुरु देवम्।

हे जन मन भ्रम हर्ता, पालन संहर्ता,
हम सब शरण तिहारी, तीन लोक कर्ता।।
कर मम शिर परितोषम्, भुवनं कृपा धीशं,
दासन दास मनावत, परमहंसमीशम्, बज्रानन्दमीशम्।।

हे परमहंस देवम्, ॐ जय सद्गुरु देवम्, भव भय त्रास ....

सबका धर्म एक है

यदि इन आठ बिन्दुओं पर भ्रम को दूर कर लिया जाय तो मानव जाति के बीच चाहकर भी किसी प्रकार का संघर्ष नहीं होगा।

१- धर्म एक है।

२- ईश्वर एक है।

३- इष्ट एक है।

४- मानव जाति एक है।

५- सभी संत एवं महापुरुष एक हैं।

६- सबका मंत्र एक है।

७- दुख का कारण एक है। (संसार का चिंतन)

८- दुख निवारण का उपाय एक है। (ईश्वर चिंतन)

उपर्युक्त आठ बातों को समझ लेने से मनुष्य के बीच बनी दूरियों को निश्चित रूप से मिटाया जा सकता है।

प्रस्तावना

धर्म विश्व में मानवजाति का एक उलझा हुआ प्रश्न है। आज धर्म के नाम पर मानव के बीच कटुता और वैमनष्यता की दुर्भेद्य दीवार खड़ी हो गई है। मानसिक संकीर्णता से सिमटा समाज आज एक–दूसरे को हेय दृष्टि से देखने के लिए विवश है और एक दूसरे के उपर अपनी परंपराओं को धर्म के नाम पर थोपने का प्रयास करता रहता है जबकि परंपराऐं मनुष्य को तोड़ती हैं, धर्म मनुष्य को जोड़ता है।

आज संपूर्ण विश्व आतंकवाद, मजहबी और क्षेत्रिय संकीर्णता के कारण खूनी संघर्ष की ओर अग्रसित है। करोड़ों लोगों को धर्म के नाम पर गुमराह किया जाता रहा है। जिस कारण संपूर्ण मानवजाति पतन के मार्ग पर चली जा रही है जिसका परिणाम सिर्फ विनाश एवं दुख है।

1976 में 42 वें संविधान संशोधन में, संविधान की प्रस्तावना में धर्म निरपेक्ष (सेक्यूलर) शब्द को जोड़ा गया जिसने आज समाज से लेकर न्यायपालिका और कार्यपालिका तक को भ्रमित कर रखा है कोई भी वस्तु निरपेक्ष तब होती है जब उसके सापेक्ष कुछ हो, धर्म सार्वभौमिक सत्य है अखंण्ड है, एकाकार और एकरस है जिसके सापेक्ष कुछ हो नहीं सकता तो धर्म निरपेक्ष कैसे हो गया। यही कारण है कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय का यह बयान भी असंगत है कि हिन्दू कोई धर्म नहीं एक जीवन पद्वति है आप ही लोग विचार करें कि क्या बोद्ध, ईसाई, इस्लाम, सिख आदि जीवन पद्वति नहीं हैं? सबके पास एक दूसरे को देने के लिए वही रोने का सामान है, जिसमें कुछ भी टिकाउ नहीं है। तो वास्तविक धर्म क्या है? इसके लिए अति आवश्यक है कि धर्म के वास्तविक स्वरूप को उन संत महापुरूषों से समझा जाये जो कि उस क्षेत्र के वास्तविक जानकार हैं ताकि समय रहते देश और संपूर्ण मानव जाति को महाविनाश से बचाकर एक धर्म की सही परिभाषा देकर, सभी संकीर्ण दीवारों को तोड़ा जा सके।

इसी संदर्भ में महापुरूषों के द्वारा समय–समय पर समाज को धर्म पर चलने के लिए प्रेरित किया है और वह रास्ता दिखाया है जिस पर चलकर मनुष्य सदैव के लिए दुखों से तथा समस्याओं से छूट जाता है और शाश्वत शांति प्राप्त करता है। धर्म के विषय में विश्व के सभी महापुरूष एक मत हैं उनके विचारों में कहीं भी भिन्नता नहीं है।

जिस देश ने विश्व को धर्म की शिक्षा दी उसी देश में एक कुरीतिवश छूने–खाने से लोगों का धर्म नष्ट होने लगा। कुरीतियाँ यहाँ तक पनपीं कि मुगलों के आक्रमण के समय उनके हाथ का एक ग्रास खाने से, दो घूंट पानी पीने से धर्म नष्ट होने लगा। धर्मभ्रष्ट होने से हजारों

हिंदुओं ने आत्महत्या कर ली। देश के किसी धर्माधिकारी ने उस समय अगर धर्म की सही व्याख्या समाज को दी होती तो हजारों लोगों को अपने प्राणों का त्याग नहीं करना पड़ता। आज इतने समय बाद भी समाज धर्म के नाम पर भ्रमित है हमने वह शिक्षा ही नहीं दी है जो हमारी मूलभूत समस्याओं का स्थाई निदान कर सके।

अगर छूने–खाने से धर्म नष्ट होता तो आज भारत में कोई भी हिंदू नहीं है क्योंकि सबने इफ्तार पार्टी में एक–दूसरे के साथ बैठकर खा लिया। वस्तुतः यह एक कुरीति थी जिसने समाज को एक विभाजन देकर आपसी टकराव के रास्ते में खड़ा कर दिया।

डॉक्टर एक ही औजार से सब के दांत निकाल लेता है, ब्लडबेंक में कहीं भी नहीं लिखा है कि यह हिंदू का खून है यह मुसलमान का खून है। खून, खून में मिल गया फिर भी धर्म सुरक्षित है। और इससे पहले जो लोग धर्म के नाम पर परम्पराओं के परिवर्तन से अपने को कुछ भी कहलाने लगे एक ही पिता की संताने हैं। सब सगे भाई हैं अगर हम धर्म की विशुद्ध व्याख्या को समाज के बीच पहुँचा सके तों आपसी भेदभाव को खत्म कर सोहार्द और प्रेम का अंकुरण समाज के बीच कर सकते हैं जो सम्पूर्ण मानव को एकता के एक सूत्र में बांधकर एक सभ्य समाज की रचना करेगा। देश के प्रतिनिधियों का भी यह दायित्व है कि वो धर्म के यथार्थ स्वरूप को समाज के बीच शिक्षा के माध्यम से जन–जन तक पहुँचायें और संविधान के मूलभूत सिद्धांतों में इसको प्रतिपादित करायें। इस प्रकार हम देश को और मानवता को उच्च आदर्शों के शिखर पर ले जा सकते हैं।

इलाहबाद उच्च न्यायालय के माननीय न्यायमूर्ति श्री. एस. एन. श्रीवास्तव का एक निर्णय प्रासंगिक है जिसमें एक फैसला सुनाते हुऐ उन्होंने कहा है, ''भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह भारत के संविधान की धारा 51(ए) के अन्तर्गत बिना किसी जाति, वंश या मजहब के भेदभाव के गीता में दिये गये धर्म का पालन करें।

यह भी अजीब विडंबना ही है कि जिन संत–महात्मा, ऋषि–महर्षियों ने धर्म को परिभाषित कर विश्व की सर्वोच्च संस्कृति का निर्माण किया, विश्व–गुरू की उपाधि से विभूषित किया आज उनके लिए संविधान में एक भी शब्द नहीं है। आज उनकी उपेक्षा के ही परिणाम स्वरूप समाज में इतनी विकृति आयी है और हम शिक्षा में उनके विचारों को सम्मलित न करके मात्र नये कानूनों के द्वारा उसे ठीक करने का प्रयास कर रहे हैं, जो कभी संभव नहीं है।

आपके अमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत है।

-स्वामी बज्रानन्द

परम्परायें मनुष्य को तोड़ती हैं धर्म मनुष्य को जोड़ता है।

शुभ संदेश : सबका धर्म एक है।

बन्धुओ !

विश्व में छोटे बड़े अनन्त जीव है। सभी अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं। यह परमपिता परमात्मा की एक अद्‌भुत व्यवस्था है। जीव जगत की विषम त्रासदी से निकलकर, आवागमन के क्रम को विराम देकर समय के सभी आप्त काम ऋषिओं ने जिन्हें अवतार, पीर, फकीर, रसूल, महापुरुष, सन्त इत्यादि नामों से जानते हैं, समय के समाज को दलदल से निकालकर एक साफ सुथरा मार्ग दिया, जिसमें चलने वाला अमृत्व प्राप्त करता है। यह क्रम अनादिकाल से चला आ रहा है, लेकिन तत्सामयिक समाज ऋषियों की वाणी हृदयगंम न करके उनके महाप्रयाण के पश्चात काल्पनिक सिद्धान्तों का आश्रय लेकर मत–मतान्तरों में सिमटता चला गया। संकीर्णता में सिमटा समाज अज्ञानवश एक–दूसरे का कट्टर विरोधी बन गया। कोई कहता है कण–कण में भगवान है, कोई कहता है जर्रे–जर्रे में खुदा है, कोई कहता है, मन–क्रम–वचन से किसी को सताना हिंसा है, जीवाणुओं का अन्दर प्रवेश हिंसा है, कोई व्रत में भूला है कोई तीर्थ में और कोई शास्त्रीय आचार विचार में। परमात्मा का परम्पराओं से कोई सम्बन्ध नहीं है।

जिसने जहाँ जिस परम्परा में जन्म लिया, सावधानी से उसका पालन अंतिम स्वाँस तक किया लेकिन काम–क्रोध–लोभ इत्यादि से छुटकारा नहीं मिला। जिनके फलस्वरूप जीव को विविध नारकीय योनियों की यात्रा करनी पड़ती है। प्रत्येक कुरीति, दुख एवं समस्याओं की जननी है।

जब जर्रे–जर्रे या कण–कण में खुदा है तो निन्दा किसकी करते हो? बार–बार माँ को प्रसव पीड़ा देना पाप है या पुण्य, हिंसा है अथवा अहिंसा? गन्ने के साथ असंख्य सूंड़ी जिसे गिराड़ भी कहते हैं कोल्हू में पिस जाती हैं और उसी गन्ने के रस से मीठा तैयार होता है, जिसका प्रयोग व्रत में सब करते हैं। व्रत में मीठा लेंगे, अन्न नहीं। गंदगी में बैठी मक्खी बार–बार शरीर पर

अधार्मिकता मनुष्य को संकीर्ण बनाती है। भेदभाव अधार्मिक होंने का लक्षण है।

बैठती है फिर भी हम पवित्र रहते हैं। मक्खन पकाते समय कितने जीव उसमें पक जाते हैं, जीव छोटा हो अथवा बड़ा माँस सबमें होता है। घी में चाहे मक्खी पकाओ या मुर्गा, आत्मा एवं माँस सभी में होता है। इसी प्रकार भक्ति, भजन, योग इत्यादि अनेकों प्रकार की भ्राँन्तियों के बीच फँसे समाज को समय के महापुरुषों ने सही मार्ग दिया।

प्रत्येक जीव सुख चाहता है, लेकिन सुख की प्राप्ति केवल मानव तन से ही सम्भव है। जब तक एक भी संस्कार शेष है माँ के गर्भ में जाना पड़ेगा। इन संस्कारों के अन्त के साथ चित्त का अपने कारणस्वरूप में तदाकार हो जाना ही आवागमन से छुटकारा है। संस्कारों के अन्त का मार्ग तत्वदर्शी सद्गुरु की सेवा एवं श्रद्धापूर्वक नाम जप से शुरु होकर भक्ति की पराकाष्ठा में साधन शेष होता है। श्रद्धा के साथ सेवा एवं नाम जप से हृदय में भक्ति का सूत्रपात होता है, जिसे योग या भजन की जागृति, इष्ट, सद्गुरु या भगवान का रथी होना कहते हैं। यह सब तभी सम्भव है जब कोई परमात्म स्वरूप सद्गुरु उपलब्ध हों। साधन जागृत होने के पश्चात भगवान निर्देशन देते हुए तथा उनके निर्देश में चलते हुए साधक एक दिन अपने उद्गम में प्रवेश कर जाता है।

परमात्मा के समझाने के हैं तो अनेक माध्यम लेकिन अनुभव जागृति के मुख्य चार स्रोत हैं– स्वप्न सुरा, स्थूल सुरा, सुषुप्ति सुरा एवं समसुरा। प्रथम दो अनुभव कुछ दिन निश्छल श्रद्धा से **'ॐ'** नाम का जप एवं सद्गुरू की टूटी–फूटी सेवा से ही जागृत हो जाते हैं। शेष दो अनुभव मन सहित इन्द्रियों के पूर्ण निरोध में ही सम्भव है।

अतः भजन समझने के लिए तत्वदर्शी महापुरुष परमावश्यक हैं। बिना इस क्रम के न कभी कोई दुखों से पार हुआ है न आगे की होगा। दुराग्रह एवं पूर्वाग्रह से अलग हटकर अध्ययन करने से वास्तविकता को हृदय में स्थान मिल जाता है, जिसके फलस्वरूप मनुष्य बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाता है।

मानव समाज में धार्मिक भ्रान्ति अनादिकाल से है। समय के प्रत्येक महापुरुष ने धर्म के ऊपर छाये अज्ञान एवं भ्रान्ति रूपी घने कोहरे को दूर कर

भेदभाव अधार्मिक होंने का लक्षण है।

स्वच्छ सुथरा मार्ग दिया, लेकिन उनके जाने के बाद कोहरा पुनः अपनी जगह ले लेता है। धर्म के ऊपर कोहरा कभी आने न पाये उसके लिये समस्त मानव जाति का कर्तव्य है कि महापुरुषों के नाम पर फैली भ्रामक धारणा को समूल नष्ट करके उनके मूल सिद्धान्त को ज्यों का त्यों स्वीकार करके सच्चे धार्मिक होने का गौरव प्राप्त करें। जिन महापुरुषों के नाम के संगठन बनाये गये, उनका मूल उपदेश क्या है उसे स्वीकार करने वाला ही उनका सच्चा पुजारी है, अनुयायी है। अपने कृत्रिम नियमों, विचारों एवं परम्पराओं को महापुरुष के नाम पर समाज पर थोपने वाले ही आत्मा एवं मानव मात्र के शत्रु हैं। जिन विचारों, नियमों एवं परम्पराओं से समाज में विघटन, पतन एवं संघर्ष होता है, उन्हें स्वीकार करने से कभी मानव एकता एवं कल्याण सम्भव नहीं। कुछ महापुरुषों के विचार दिये जा रहे हैं जो आत्मा का हित चाहने वाले सच्चे धार्मिक जिज्ञासु को धार्मिक अन्धविश्वास एवं भ्रान्ति दूर करने में सहायक सिद्ध होंगे।

1. ***वेद***

येन देवाः स्वराकहुर्हित्वा शरीरम् मृत्स्य नाभिम्।
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकं धर्मस्य व्रतेन तपसा यशस्यवः।।

– जिस धर्म के द्वारा देवगण अपने शरीर को त्याग कर अमृत रूपी मोक्ष पर आरूढ़ हुए हैं उस धर्म को व्रत रूपी तपस्या से यशस्वी होते हुए हम पुण्य लोक को प्राप्त हुए हैं।

अर्थवेद(4/11/96) पेज 488

2. *योग दर्शन :–*

(क) सर्वार्थतैकाग्रतयोः क्षयोदयौ चित्तस्य समाधिपरिणामः।

(ख) ततः पुनः शान्तोदितौ तुल्यप्रत्ययोः चित्तस्यैकाग्रता परिणामः।

(ग) एतेन भूतेन्द्रियेषु धर्मलक्षणावस्थापरिणामा व्याख्याताः।

धार्मिक व्यक्ति के पास करूणा का सागर होता है।

(घ) शान्तोदिता व्यपदेश्य धर्मानुपाति धर्मी।

3.– बुद्ध ईसा आदि महापुरुष गण यदि लौट आएं तो जगत में अपना धर्ममत ढूँढ भी न पाएँगे। पाने पर भी चकित होकर देखेंगे कि उनके कट्टर भक्तों ने उनके नाम का किस प्रकार दुरुपयोग किया है।

हीरानन्द आरण्य (पातंजलि योग दर्शन की भूमिका पेज 25)

4. वेदान्त :–

अथातों ब्रह्म जिज्ञासा।

– ब्रह्म के प्रति उत्कृष्ट जिज्ञासा ही धर्म है।

भगवान वेद व्यास

5. वैषेशिक शास्त्र :–

यतोऽभ्युदय निःश्रेयस्सः सिद्धि सः धर्मः।

– वैषेशिक शास्त्र के प्रणेता महर्षि कणाद के विचारों में जिस आचरण से अभ्युदय (सर्वांगीण विकास) एवं परम श्रेय परमात्मा की प्राप्ति हो, वही एकमात्र धर्म है।

महिर्ष कणाद

6. मीमांसा :–

अथातो धर्म जिज्ञासा।

– धर्म अर्थात् आत्मा (परमात्मा) के प्रति जिज्ञासा ही धर्म का प्रथम चरण है।

7. सांख्य शास्त्र

– सांख्य शास्त्र के प्रणेता भगवान कपिल मुनि अपने पिता एवं माता को उपेदश देते हुए कहते हैं कि परमात्मा की शरण में दुखों की पूर्ण निवृत्ति में ही मानव तन की सार्थकता है, यही धर्म है। इसके अभाव में जीव अनन्त जन्मों तक नरक योनियों में पड़ा रहता है।

धार्मिक व्यक्ति के पास दुख एवं अप्रसन्नता का अभाव होता है।

8. भगवान वामन :–

– भगवान वामन ने बलि से कहा– ''तुम अपने धर्म से विचलित नहीं हुए। तुमने दान (समर्पण) एवं यज्ञ (भजन) द्वारा मुझे संतुष्ट किया है इसलिए तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ तुम्हें स्वर्ग से भी उत्तम स्थान देता हूँ और तुम्हारा प्रिय कार्य करने के लिए सदैव तैयार हूँ, सदा तुम्हारे पास रहूँगा'' अर्थात् धर्माचरण वह क्रिया है जिससे परम तत्व परमात्मा वश में हो जाता है।

9. भागवत महापुराण भगवान ऋषभदेव :–

(क) ***कस्तं स्वयं तद भिज्ञो विपश्चिद् ।***
अविद्यायामन्तरे तर्वमान्य् ।।
दृष्टवा पुनस्तं सघृणः कुबुद्धिं ।
प्रयोजये दुत्पथगं यथान्धय ।।7 ।।

भागवत प्रकरण स्कन्ध 5 अ0 5

– गड्ढे में गिरने के लिये उल्टे रास्ते से जाते हुए अन्धे मनुष्य को जैसे आँख वाला पुरुष उधर नहीं जाने देता, वैसे ही अज्ञानी मनुष्य को अविद्या में फँसकर दुखों की ओर जाते हुए देखकर कौन ऐसा दयालु और ज्ञानी पुरुष होगा जो जानबूझकर उसी राह पर जाने दे या जाने के लिये प्रेरणा दे।

(ख) ***गुरुर्न स स्यात्स्वजनो न स स्यात् ।***
पिता न स स्याज्जननी न सा स्यात् ।
दैवं न तत्स्याल पतिश्च स्या
ना मोच ये येद्य सपमुपेत मृत्युम् ।।8 ।।

– जो अपने प्रिय सम्बन्धी को भगवत भक्ति का उपदेश देकर मृत्यु की फाँसी से नहीं छुड़ाता, वह गुरू, गुरू नहीं, स्वजन, स्वजन नहीं, पिता, पिता नहीं, माता, माता नहीं, इष्टदेव, इष्टदेव नहीं, पति, पति नहीं।

धार्मिक व्यक्ति की सम्पूर्ण समस्याऐं स्वतः हल हो जाती हैं।

(ग) *इदं शरीरंमम दुर्विभयं।*
सत्वं हिये हृदयं यत्र धर्मः।।
पृष्ठे कृतो में यह धर्म आराद।
अतो हि मामृषभं प्राहुरार्या।।

– मेरे अवतार शरीर का रहस्य साधारण जनों के लिये बुद्धिगम्य नहीं है। शुद्ध सत्व ही मेरा हृदय है और उसी में धर्म की स्थिति है। मैंने अधर्म को अपने से बहुत दूर पीछे की ओर धकेल दिया। इसी से सत्पुरुष मुझे ऋषभ कहते हैं।

(घ) *पुत्रांश्च शिष्यांश्च नृपो गुर्रचा।*
यल्लोक कामो मदनुग्रहार्थः।।
इत्थं विमन्युसु शिष्याद जज्ञान्।

– जिसको मेरे लोक की इच्छा है अथवा मेरे अनुग्रह की प्राप्ति को ही परम पुरुषार्थ मानता है तो राजा हो तो अपनी अबोध प्रजा को, गुरु अपने शिष्यों को और पिता अपने पुत्रों को ऐसी ही शिक्षा दे।

10. ***भगवान वाल्मीकि :–***

धर्मो हि परमो लोके धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम्।

वाल्मीकि रामायण अयो0 22/49

–धर्म ही लोक में सर्वश्रेष्ठ है, धर्म में ही सत्य प्रतिष्ठित है।

सर्वेषा परितुष्य चरन्तया मम धर्मेण न कार्यमिति केनचित।

– मैं तुम सभी वेगशाली वानरों से यूँ ही बहुत संतुष्ट हूँ। धर्मानुष्ठान में लगा होने के कारण किसी से कोई प्रयोजन नहीं रह गया है अर्थात् धार्मिक व्यक्ति राग–द्वेष से परे हो जाता है।

11. ***श्रीमदभगवद् गीता :–***

(क) *यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।*
अभ्युत्थानम्धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। *4/7*

– हे अर्जुन! जब–जब परमधर्म परमात्मा के लिए हृदय ग्लानि से भर

जाता है, जब अधर्म की वृद्धि से भाविक पार पाते नहीं देखता, तब मैं आत्मा को रचने लगता हूँ।

(ख) परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे–युगे।। 4–8

– अर्जुन ! 'साधूनां परित्राणाय' – परम साध्य एकमात्र परमात्मा हैं, जिसे साध लेने पर कुछ भी साधना शेष नहीं रह जाता। उस साध्य में प्रवेश दिलाने वाले विवेक, वैराग्य, शम–दम इत्यादि दैवी सम्पद् को निर्विघ्न प्रवाहित करने के लिए तथा 'दुष्कृताम्' जिससे दूषित कार्य रूप लेते हैं, उन काम–क्रोध, राग–द्वेषादि विजातीय प्रवृत्तियों को समूल नष्ट करने के लिए तथा धर्म को भली प्रकार स्थिर करने के लिये मैं युग–युग में प्रकट होता हूँ।

(ग) कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढ़चेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे,
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्। 2/7

– कायरता के दोष से नष्ट स्वभाववाला, धर्म के विषय में सर्वथा मोहित चित्त हुआ मैं आपसे पूछता हूँ। जो कुछ निश्चित परमकल्याणकारी हो वह साधन मेरे लिए कहिए। मैं आपका शिष्य हूँ, आपकी शरण में हूँ, मुझे साधिये। केवल शिक्षा न दीजिए, बल्कि जहाँ लड़खड़ाऊँ वहाँ संभालिए। अर्थात धर्म की जानकारी के लिए जीवनमुक्त सद्गुरु परमावश्यक है।

(घ) नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्वदर्शिभिः।। 2/16

– अर्जुन! असत् वस्तु का अस्तित्व नहीं है, वह है ही नहीं, उसे रोका नहीं जा सकता और सत्य का तीनों काल में अभाव नहीं है, उसे मिटाया नहीं जा सकता। अर्जुन ने पूछा– क्या भगवान होने के नाते आप कहते हैं? श्री कृष्ण ने बताया– मैं तो कहता ही हूँ, इन दोनों का यह अन्तर हमारे

धर्म पर चलने से सम्पूर्ण संकीर्णता स्वतः तृप्त हो जाती है।

साथ–साथ तत्वदर्शियों द्वारा भी देखा गया है। श्रीकृष्ण ने वही दोहराया जो तत्वदर्शियों ने कभी देख लिया था। श्रीकृष्ण भी एक तत्वदर्शी महापुरुष थे। परमतत्व परमात्मा का प्रत्यक्ष दर्शन करके उसमें स्थितिवाले तत्वदर्शी कहलाते हैं। सत् और असत् क्या है? इस पर कहते हैं कि सत् जो अपरिवर्तनशील हैं वह धर्म है।

(ङ) *अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्।*
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति।। 2/17

– नाशरहित तो वह है, जिससे यह सम्पूर्ण जगत् व्याप्त है। इस 'अव्ययस्य'– अविनाशी का विनाश करने में कोई समर्थ नहीं है; किन्तु इस 'अविनाशी', 'अमृत' का नाम क्या है? वह है कौन? इस पर कहते हैं।

(च) *य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।*
उभौ तौ न विजीनीतो नायं हन्त न हन्यते।। 2/19

– जो इस आत्मा को मरने वाला मानता है तथा जो इस आत्मा को मरा हुआ समझता है, वे दोनों ही आत्मा को नहीं जानते; क्योंकि यह आत्मा न तो मरता है और न मारा ही जाता है। अर्थात् आत्मा ही परम सत्य है जिसका कभी विनाश नहीं होता, उसे यथावत जानना ही धर्म है।

(छ) *न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।*
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।
2/20

– यह आत्मा किसी काल में न तो जन्मता है और न मरता है; क्योंकि वह वस्त्र ही तो बदलता है। न यह आत्मा होकर अन्य कुछ होने वाला है; क्योंकि यह अजन्मा है, नित्य है, शाश्वत और पुरातन है। शरीर के नाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता। आत्मा ही सत्य है, आत्मा ही पुरातन है, आत्मा ही शाश्वत है और सनातन है। आप कौन हैं? शाश्वत धर्म के उपासक। शाश्वत कौन है? आत्मा। अर्थात् हम–आप आत्मा के उपासक हैं। यदि आप आत्मिक पथ को नहीं जानते तो आपके पास शाश्वत–सनातन नाम की कोई वस्तु नहीं है। इसके लिए आप आहें भरते हैं, तो प्रत्याशी अवश्य हैं; किन्तु

जिस देश जाति या व्यक्ति में अराजकता, अधर्म बढ़ जाता है
उसमें दूसरा राष्ट्र, जाति या व्यक्ति शासन करता है।

सनातनधर्मी नहीं हैं; सनातन धर्म के नाम पर किसी कुरीति के शिकार हैं।

देश–विदेश में, मानवमात्र में आत्मा एक ही जैसा है। इसलिये विश्व में कहीं भी कोई आत्मा की स्थिति दिलाने वाली क्रिया जानता है और उस पर चलने के लिये प्रयत्नशील है, तो वह सनातनधर्मी है; चाहे वह अपने को ईसाई, मुसलमान, यहूदी सिक्ख या पारसी कुछ भी क्यों न कह ले। जैसे–जैसे धर्म में स्थिति होगी वैसा ही लक्षण होगा। इसी पर कहते हैं –

(ज) ***वासांसि जीर्णानि यथा विहाय***
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा–
न्यन्यानि संयाति नवानि देही। **2/22**

– जैसे मनुष्य 'जीर्णानि वासांसि' जीण–शीर्ण पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, ठीक वैसे ही यह जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को धारण करता है। जीर्ण होने पर ही नया शरीर धारण करना है तो शिशु क्यों मर जाते हैं? यह वस्त्र तो और विकसित होना चाहिए। वस्तुतः यह शरीर संस्कारों पर आधारित है। जब संस्कार जीर्ण हो जाते हैं तो शरीर छूट जाता है। यदि संस्कार दो दिन का है तो दूसरे दिन ही शरीर जीर्ण हो गया। इसके बाद मनुष्य एक श्वांस भी अधिक नहीं जीता। संस्कार ही शरीर है। आत्मा संस्कारों के अनुसार नया शरीर धारण कर लेता है?

(झ) ***नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहाति पावकः।***
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।। **2/23**

– अर्जुन! इस आत्मा को शस्त्रादि नहीं काटते। अग्नि इसे जला नहीं सकती। जल इसे गीला नहीं कर सकता और वायु इसे सुखा नहीं सकती है।

(ञ) ***प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये।***
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी।। **18/30**

– पार्थ! प्रवृत्ति और निवृत्ति को, कर्तव्य को और अकर्तव्य को, भय और अभय को तथा बंधन और मोक्ष को जो बुद्धि यथार्थ जानती है, वह बुद्धि

सात्त्विकी है। अर्थात् परमात्म–पथ, आवागमन–पथ दोनों की भली प्रकार जानकारी सात्त्विक बुद्धि है। यथा –

(ट) यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च।
अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी।।
18/31

– पार्थ! जिस बुद्धि द्वारा मनुष्य धर्म और अधर्म को तथा कर्तव्य और अकर्तव्य को भी यथावत नहीं जानता, अधूरा जानता है, वह बुद्धि राजसी है। अब तामसी बुद्धि का स्वरूप देखें–

(ठ) अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ।। *18/32*

– पार्थ! तमोगुण से ढकी हुई जो बुद्धि अधर्म को धर्म मानती है तथा सम्पूर्ण हितों को विपरीत ही देखती है, वह बुद्धि तामसी है।

यहाँ श्लोक तीस से बीत्तस तक बुद्धि के तीन भेद बताये गये। पहली बुद्धि को किस कार्य से निवृत्त होना है और किसमें प्रवृत्त होना है, कौन कर्तव्य है और कौन अकर्तव्य है, इसकी भली प्रकार जानकारी रखती है, वह बुद्धि सात्त्विक है। जो कर्तव्य–अकर्तव्य को धूमिल ढंग से जानती है, यर्थाथ नहीं जानती, वह राजसी बुद्धि है और अधर्म को धर्म, नश्वर को शाश्वत तथा हित को अहित– इस प्रकार विपरीत जानकारी वाली बुद्धि तामसी है।

(ड) श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्विषम्।। *18/47*

– अच्छी प्रकार अनुष्ठान किये हुए दूसरे के धर्म से भी गुणरहित स्वधर्म परमकल्याणकारक हैं। 'स्वभाव नियतं'– स्वभाव से निर्धारित किया हुआ कर्म करता हुआ मनुष्य पाप अर्थात् आवागमन को प्राप्त नहीं होता। प्रायः साधकों को उच्चाटन होने लगता है कि हम सेवा करते ही रहेंगे। वे तो ध्यानस्थ हैं। अच्छे गुणों के कारण उनका सम्मान है। तुरन्त वे नकल करने लगते हैं।

– श्रीकृष्ण के अनुसार नकल या ईर्ष्या से कुछ मिलेगा नहीं। अपने

स्वभाव से कर्म करने की क्षमता के अनुसार कर्म करके ही कोई परमसिद्धि पाता है, छोड़कर नहीं। अर्थात् अपनी क्षमता के अनुसार धर्म (आत्मिक क्रिया) में प्रवृत्त होने वाला शीघ्र परम कल्याण को प्राप्त होता है।

10. (क) रामचरित मानस :–

– भगवान राम लंका काण्ड में धर्मस्थ का वर्णन करते हुए कहते हैं कि शौर्य, धैर्य पहिया हैं। सत्य का आचरण ध्वजा है। आत्मिक बल, विवेक, इन्द्रियों का दमन, आत्मा का हित यही घोड़े हैं। क्षमा, कृपा एवं समता ही लगाम है। परमात्मा का चिंतन ही सारथि है। वैराग्य ही ढ़ाल है। सन्तोष ही तलवार है। निर्मल एवं अचल मन ही अक्षय तर्कस है। संयम नियम ही बाण है। विषयों से परे विप्र (सद्गुरु) देव के चरणों की पूजा ही अभेद कवच है। इस धर्मरथ पर आरुढ़ होकर साधक संसार रूपी शत्रु को जीतता है, अर्थात् विकारों पर पूर्ण विजय के बाद अपने स्वरूप की प्राप्ति इस धर्मरथ के द्वारा सम्भव है। विकारों से सर्वथा मुक्त होकर स्वरूप की उपलब्धि ही धर्म का उद्देश्य है। अन्य प्रसंगों में भी इसी तथ्य पर प्रकाश डाला गया है।

धर्म न दूसर सत्य समाना, आगम निगम पुरान बखाना।।
व्यापक एक ब्रह्म अविनासी, सत चेतन घन आनन्द रासी।।
अस प्रभु हृदय अक्षत अविकारी, सकल जीव जग दीन दुखारी।।
सोई धर्मज्ञ तग्य सोई पंडित, सोई गुण ग्रह विज्ञान अखंडित।।
सोहि महि मण्डित पंडित दाता, सोई धनवंत गुणी सोई ज्ञाता।।
धर्म परायण सोई कुल ताता, रामचरण जाकर मन राता।।
परहित सरसि धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अघमाई।।
परम धरम श्रुति विदित अहिंसा, पर निन्दा सम अघ न गिरीसा।।
उमा कहऊ मैं अनुभव अपना, सत हरि भजन जगत सब सपना।।
सो सब कर्म धर्म जरि जाउ, जेहि न राम पद पंकज भाउ।।
एकई धर्म एक व्रत नेमा, काय वचन मन पति पद प्रेमा।।

धर्म मानव जीवन की एक सबसे बड़ी उपलब्धि है।

सौरज धीरज तेहि रथ चाका, सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका।।

11. भगवान वेद व्यास

(क) इज्याध्ययन दानादि तपः सत्य क्षमा यमः।

अलोभ इति मार्गोऽयं धर्मस्याष्टविधः स्मृतः।। (महाभारत वनपर्व 2/75, पेज 489)

–यज्ञ, अध्ययन, दान, तप, सत्य, क्षमा, मन और इन्द्रियों का संयम तथा लोभ का त्याग ये धर्म के आठ मार्ग हैं।

(ख) अद्रोह, सर्व भूतेषु कर्मणा मनसागिरा।

अनुगृहश्च दानं च सतां धर्मः सनातनः।।

(महाभारत वनपर्व 297/35, पेज 489)

– मन, वचन और कर्म से सब प्राणियों के प्रति अद्रोह, अनुग्रह और दान– यह सज्जनों का सनातन धर्म है।

(ग) अर्थ सिद्धिं परामिच्छन् धर्म मेवादितश्चरेत्।

न हि धर्मादपैत्यर्थः स्वर्ग लोका दिवामृतम।।

(महाभारत उद्योगपर्व 37/48, पेज 489)

– जो अर्थ की सम्पूर्ण सिद्धि चाहता है, उसे पहले धर्म का ही आचरण करना चाहिए। स्वर्ग से अमृत के समान धर्म से अर्थ अलग नहीं होता।

(घ) धारणाद् धर्म मित्याहुणर्मेण विधृताः पुजाः।

यः स्याद् धारण संयुक्तः स धर्म इतिनिश्चयः।।

(महाभारत शान्ति पर्व)

– सबको धारण करता है इसलिये धर्म कहा जाता हैं धर्म ने ही सारी प्रजा को धारण कर रखा है। अतः जो धारण से संयुक्त हो वही धर्म है।

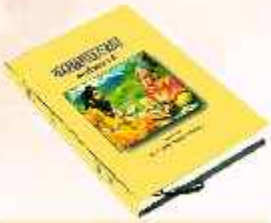

(ड़) सूक्ष्मागतिर्हि धर्मस्य दुर्ज्ञेया ह्ययक्रतात्मभिः।

(महाभारत अनुशासन पर्व 10/96, पेज 490)

– धर्म की गति अति सूक्ष्म है। इसे अपवित्र अन्तःकरण के पुरुषों के द्वारा समझा जाना कठिन है।

(च) अहिंसा सत्यमक्रोध आनृशस्यं दमस्तथा।

आर्जवं चैव राजेन्द्र निश्चित धर्म लक्षणम।।

(महाभारत अनुशासन पर्व 22/19, पेज 490)

– अहिंसा (आत्मा का उद्धार) सत्य, क्रोध, दया, दम और सरलता यही निश्चितपूर्वक धर्म के लक्षण हैं।

12. पुरान :–

1. *(क) धर्मः सनो यत्न न सत्यमास्ति नैतत्सत्यं यच्छ ले नानुविद्ध।*

– जो सत्य नहीं है वह धर्म नहीं है और जो छल से युक्त है वह सत्य नहीं है।

(गरूड़ पुरान 1/115/52, पेज 412)

(ख) नास्ति धर्मात परो बन्धुर्नास्ति धर्मात् परं धनम्।

धर्मात् प्रियः परः को वा स्वधर्म रक्ष यत्नतः।।

– धर्म से श्रेष्ठ बन्धु नहीं है और धर्म से बढ़कर धन नहीं है। धर्म से अधिक प्रिय और उत्तम कौन है? अतः यत्नपूर्वक अपने धर्म की रक्षा कीजिए।

ब्रह्मवर्त पुरान (श्री कृष्ण जन्मखपा 62/22) पेज

(ग) सत्ये धर्मे च निरतान् मानवान विगत ज्वरान।
ना काले धर्मिणो मृत्युः शक्नोति प्रसमी क्षितुम।।

– जो मनुष्य सत्य और धर्म में तत्पर रहकर चिन्ता रहित हो, धर्म के अनुष्ठान में लगे हुए हैं उनकी ओर अकाल मृत्यु आँख उठाकर देख भी नहीं सकती।

हरिवंश पुराण (हरिवंश पर्व 51 / 2) पेज 421

(घ) बुधेन तात दान्तेन नित्यभ्युच्छि तात्मना।
धर्मस्य गतिरन्वेष्या मत्स्यस्यगतिरप्विन।

– तात्! जिसकी आत्मा उन्नति के पथ पर अग्रसर है तथा जो जितेन्द्रिय एवं विवेकशील विद्वान है, उस पुरुष को धर्म गति का सदा ही अन्वेषण करना चाहिए। जैसे जल में मछली की गति अत्यन्त सूक्ष्म या अव्यक्त होती है उसी प्रकार धर्म की गति भी सूक्ष्म है।

13. पारसी धर्म प्रवर्तक जरथुस्त्र :–

– द्रोण पर्वत पर तपस्या करते हुये दिव्य प्रकाश के रूप परमात्मा का दर्शन पाया उसी प्रकाश में से आवाज आई अहूरमज्दा (असुर मर्दन) सम्पूर्ण क्लेश और पापों से छूट गए। अहुर मज्दा (असुर मर्दन) परमात्मा रूपी अग्नि में सभी पाप एवं क्लेश जल जाते हैं, अतः उसी का आश्रय लो, यही मेरी अनुकम्पा है, यही मेरा आदेश है।

14. भगवान बुद्ध :–,

(क) क्रोध को थोड़ा भी अवकाश मत दो, यह धर्म एवं यश को नष्ट करता है, रूप का शत्रु है, हृदय की अग्नि है, गुणों के लिए इसके समान कोई शत्रु नहीं है।

(ख) कपट एवं धर्माचरण असंगत है इसलिये कुटिल उपायों का

सहारा न लो। छल एवं छद्म ठगने के लिये हैं किन्तु जो धर्म में लगे हुए हैं उनके लिए ठगने जैसी कोई चीज नहीं है।

1. चार आर्य सत्य :–

1. दुख को पहचानो
2. कारणों का त्याग
3. निरोध का अनुभव
4. मार्ग की भावना

2. अष्टांगिक योग मार्ग :–

1. सम्यक संकल्प
2. सम्यक दृष्टि
3. सम्यक कर्म
4. सम्यक आजीविका
5. सम्यक व्यायाम
6. सम्यक वाणी
7. सम्यक ध्यान
8. सम्यक समाधि।

1. इसलिये अपने भावों को सम तथा चित्त को नियंत्रित रखते हुए संसार के उदय और व्यय को जानो और समाधि का अभ्यास करो क्योंकि जिसने मानसिक समाधि प्राप्त कर ली है उसे कोई व्याधियाँ स्पर्श नहीं कर सकतीं।

2. इसलिए अप्रमाद में वैसे ही लगो जैसे कि गुरु में और प्रमाद का वैसे ही त्याग करो जैसे कि शत्रु का। अप्रमाद के द्वारा इन्द्र ने स्वर्ग प्राप्त किया और प्रमाद द्वारा असुरों ने विनाश। करूणामय, सहानुभूतिपूर्ण एवं हितैषी गुरु को जो कुछ करना चाहिए वे सब मैंने किया। अब अपने मन को लगाओ और चित्त को शान्त करो।

विग्गय्ह प्राकृत नं विवदन्ति जना एक गद स्सिनो।

– धर्म के केवल एक ही अंग को देखने वाले आपस में झगड़ते रहते हैं, विवाद करते हैं। उदान (6/4½ पृ0 483)

संत च धम्मो न जरं उपेति।

– सत्पुरुषों का धर्म कभी पुराना नहीं होता है।

पालि संयुक्त निकाय (1/3/2) पृ0 483

यदि धर्म की परिभाषा हिंसा, अराजकता, लूटपाट, छीना-झपटी तथा एक-दूसरे के अधिकारों को छीनकर परेशान करना है, तो अधर्म की परिभाषा क्या होगी?

3. तुम जहाँ कहीं रहो पर्वत पर या शून्य भवन में या जंगल में धर्माचरण में सदा प्रयत्नशील रहो और पश्चाताप न करो।

सच तो यह है कि कठोर आचरण, योगाचरण के बिना केवल मेरे दर्शन से ही मुक्ति नहीं मिलती। जो कोई मेरे इस धर्म को ठीक–ठाक समझता है, वह मेरे दर्शन के बिना भी दुख के जाल से मुक्त हो जाता है।

इस जगत में मेरे धर्म को देखने वाला संयातात्मा मनुष्य दूरवर्ती होने पर मुझे देखता है और जो श्रेय परायण नहीं है वह बगल में रहते हुए भी बहुत दूर रहता है।

इसलिये सदा आलस्य रहित (वीर्यवान) रहो और मन को वश में रखो। परिश्रम पूर्वक श्रेयस्कर कार्य करो क्योंकि हवा में जलती दीप शिखा के समान जीवन चंचल और महान दुख के वशीभूत है।

मैंने रात्रि के अन्तिम पहर में उस अविनाशी तत्व को प्राप्ति किया, सर्वज्ञता को प्राप्त किया जिसे पूर्व मनीषियों ने पाया अर्थात् भगवान बुद्ध से पहले भी ऋषियों ने उसी सत्य (परमात्मा) को पाया, बुद्धत्व प्राप्त किया बुद्ध कोई नई वस्तु नहीं पाए, न ही कोई नया मार्ग (धर्म) बताया। उस परमात्मा को मध्यम मार्ग के द्वारा अष्टांगिक योग मार्ग एवं चार आर्य सत्य परमात्मा में प्रवेश की कुँजी है।

जैसे कोई रोगी औषधि सेवन किये बगैर केवल वैद्य को देखकर रोगमुक्त नहीं हो जाता वैसे ही जो कोई मेरे इस धर्म की भावना नहीं करता वह मात्र मेरे दर्शन से दुखमुक्त नहीं हो सकता।

गामे वा अदुवा रण्णे

नैव गामे नैव रण्णे धम्म मायाणह।

– धर्म गाँव में भी हो सकता है, अरण्य में भी क्योंकि धर्म न गाँव में होता है न अरण्य में, वह तो अन्तरात्मा में होता है।

(आचारांग 1/8/1) पृ0 482

4. पथ प्रदर्शक द्वारा उत्तम, समतल, सीधा एवं निरापद मार्ग बताए जाने पर यदि सुनने वाले उस पर न चल सकें और विनाश को प्राप्त हुए तो

पथ प्रदर्शक पर आदेश रूपी ऋण शेष नहीं रहता।

5. मेरे उस पार चले जाने पर तुम्हारे प्रति मोक्ष को अपना आचार्य, अपना प्रदीप, अपना कोष समझना चाहिए, वही तुम्हारा उपदेशक है जिसके आधीन तुम्हें रहना चाहिए और तुम्हें इसकी आवृति करनी चाहिए जैसे कि मेरे जीवनकाल में करते हो।

6. शारीरिक एवं वाणी के कर्मों की शुद्धि के लिए सब सांसारिक (व्यवस्था) को छोड़ो तथा भूमि, जीव, अन्न और कोष आदि लेने से वैसे ही बचो जैसे कि आग पकड़ने से।

7. इसलिये वह धर्मवान है जिसका शील विशुद्ध व अखण्ड है, अविनष्ट है क्योंकि शील ही सद्‌गुणों का आश्रय है।

8. चित्त के स्वतन्त्र रहने पर शान्ति नहीं मिलती किन्तु इसके स्थिर होने पर कार्य पूरा होता है इसलिये यथाशक्ति यत्न करो जिससे तुम्हारा ये चित्त चंचलता से विरक्त हो जाए।

9. औषधि की मात्रा के समान भोजन की मात्रा का सेवन करो और उससे अनुराग या घृणा मत करो, उतना ही खाओ जितना कि क्षुधा शान्ति और शरीर रक्षा के लिए आवश्यक है।

10. सारा दिन और रात का प्रथम प्रहर व अन्तिम भाग (यम) योगाचार में बिताओ और मध्य रात्रि में स्मृति पूर्वक सोओ जिससे कोई अनर्थ न हो।

11. क्षमा के समान कोई तप नहीं। जो क्षमावान है उसमें शक्ति है, धैर्य है और जो दूसरों का कठोर व्यवहार नहीं सहते वे न तो धर्म संस्थापकों के मार्ग पर चलते हैं और न उनका त्राण ही होता है।

12. यदि तुम निर्वाण चाहते हो तो संतोष का अभ्यास करो। सन्तोष होने पर ही यहाँ सुख मिलता है और सन्तोष ही धर्म है। सन्तुष्ट मनुष्य भूमि पर भी सुख–शान्तिपूर्वक सोते हैं और असन्तुष्ट मनुष्य स्वर्ग में भी जलते रहते हैं।

13. जो परम शान्ति व सुख पाना चाहते हैं उन्हें सुख में उतना

आसक्त नहीं होना चाहिए क्योंकि इन्द्र और दूसरे देवगण भी संसार के उस मनुष्य से ईर्ष्या करते हैं जो शान्ति की प्राप्ति में लगा हुआ है।

15. भगवान महावीर का धर्म :–

(क) धम्मो मंगल मुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नंमसंति जस्स धम्मेसया मणो।।

दश0 1/1

– धर्म उत्कृष्ट मंगल है। वह अहिंसा, संयम तप रूप है। जिस साधक का मन सदा उक्त धर्म में रमण करता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

(ख) एगा धम्मपडिमा जं से आया पज्जवजाए। (स्था नाग 1/1/40)

– धर्म ही एक ऐसा पवित्र अनुष्ठान है जिससे आत्मा का शुद्धिकरण होता है।

(ग) एक्को हु धम्मो नरदेव। ताणं न विजजई अन्नमि हेइ किंचि। (उत्तराध्ययन 14/40)

– राजन एक धर्म ही रक्षा करने वाला है, उसके सिवाय मनुष्य का कोई भी रक्षक नहीं है।

(घ) सो ही उज्जु अभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।। (उत्तराध्ययन 3/12)

– सरल आत्मा की शुद्धि होती है और शुद्धात्मा में धर्म स्थिर रहता है।

(ड़) धम्मंस्स विणओ मूलं। परमो यसे मोक्खो (दश0 वै0 9/2/2)

– धर्म का मूल विनय है, मोक्ष उसका फल है।

(च) धम्मज्झाणरए जे स भिक्खू।। (दशै वै0 10/11)

– जो धर्म ध्यान में सतत् रहता है वह भिक्षु है।

धार्मिक व्यक्ति चाहते हुए भी भेदभाव, कटुता एवं कपट का व्यवहार नहीं कर सकता।

(छ) धर्म सत्य है। सत्य, देश और काल से अबाधित होता है। देश बदल जाने पर धर्म नहीं बदलता। काल बदल जाने पर भी धर्म नहीं बदलता। —मुनि रमालि / भ्रध महावीर प्र0 206

(ज) ***सम्यग दर्शन ज्ञान चरित्राणि —***

महापुरुषों का दर्शन एवं उनके ज्ञान को अपने जीवन में चरित्रार्थ करना ही धर्म है।

16. ईसा मसीह :— बाईबिल :—

(क) अपने मन से खेद और अपनी देह से दुख दूर कर क्योंकि

लड़कपन और जवानी दोनों व्यर्थ हैं। अपनी जवानी के दिनों में अपने सिरजनहार को स्मरण रख इससे पहले कि विपत्ति के वे दिन और वे वर्ष आएं जिनमें तू कहे कि इनमें मेरा मन नहीं लगता। बाईबिल समोपदेशक श्रेष्ठ गीता

(ख) हे मेरे पुत्र! इन्ही से चौकसी सीख, बहुत पुस्तकों की रचना का अन्त नहीं होता और बहुत पढ़ना देह को थका देता है।

(ग) सब कुछ सुना गया। अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है। (समोपदेशक श्रेष्ठगीत)

(घ) जो धर्म और कृपा का पीछा पकड़ता है, वह जीवन धर्म और महिमा भी पाता है। (नीति वचन पेज बाईबिल)

(ड़) उसने उससे कहा तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा यही है और उसी के समान दूसरा भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। (मती 22 बाइबिल 22 / 37.40 पेज 34)

(च) हे परमेश्वर! तू मेरा ईश्वर है तुझे यतन से ढूढूँगा। सुखी और निर्जल भूमि पर मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।

(छ) भक्तिहीन जन अपने पड़ोसी को अपने मुँह की बात से बिगाड़ता है, परन्तु धर्मी लोग ज्ञान के द्वारा बचते हैं।

(नीति वचन 936, पेज 9)

(ज) दुष्ट मिथ्या कमाई कमाता है परन्तु जो धर्म का बीज बोता है उसको निश्चय फल मिलता है।

(झ) जो धर्म पर दृढ़ रहता है वह जीवन पाता है परन्तु जो बुराई का पीछा करता है वह मृत्यु का कौर हो जाता है।

(ञ) मैं दृढ़ता के साथ कहता हूँ बुरा मनुष्य निर्दोष न ठहरेगा, परन्तु धर्मी का वंश बचाया जाएगा।

(ट) सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही भजन करने वालों को ढूँढता है।

(ठ) ईसा ने उससे कहा मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ। बिना मेरे द्वारा पिता के पास कोई नहीं पहुँच सकता। यदि तुमने मुझे जाना होता तो मेरे पिता को जानते जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है।

(ड) धन्य है वह जो जागता रहता है और अपने वस्त्र क चौकसी करता है कि नंगा न फिरे और लोग उसका नंगापन न देख सकें।

(ढ) धर्म खरी चाल चलने वालों की रक्षा करता है, किन्तु पापी दुष्टता के कारण उलट जाता है।

(ण) जब दुष्ट लोग उल्टे जाते हैं तब वे रहते ही नहीं, परन्तु धर्मियों का घर स्थिर रहता है।

(त) दुष्टजन बुरे लोगों के जाल की अभिलाषा करते हैं परन्तु धर्मियों की जड़ हरी–भरी रहती है।

(थ) धर्मियों की लालसा तो केवल भलाई की होती है, परन्तु दुष्टों की आशा का फल क्रोध ही होता है।

(द) कोई मनुष्य संसार का संपूर्ण वैभव प्राप्त कर ले और अपनी आत्मा को ही खो दे, इससे बड़ी हानि और क्या हो सकती है। अर्थात् आत्मा को जानना ही धर्म है।

17. मोहम्मद :– कुरान

(क) हे ईमान लाने वालों! ईमान लाओ। अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी है और उस किताब पर जो उससे पहले उतार चुका है और जिस किसी ने अल्लाह, उसके फरिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों का और अन्तिम दिन का इन्कार किया, वह भटककर बहुत दूर जा पड़ा।

(अन मिसा 136 पारा 5)

(ख) तुम अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ यह न कहो कि वह तीन हैं। बाज आ जाओ, यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है। अल्लाह तो केवल अकेला इलाह (पूज्य इष्ट) है। यह उसकी महिमा के प्रतिकूल बात है कि उसके कोई बेटा हो। आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है सब उसी का है।

(अन निसा पारा 6 आयत 171)

(ग) अल्लाह के सिवाय अपना कोई संरक्षक, मित्र व सहायक नहीं पायेंगे। (अन निसा पारा 6 आयत 174)

(घ) हे ईमान लाने वालों! अल्लाह से डरते रहो और उस तक पहुँचने का साधन ढूँढो और उसकी राह में जेहाद करो ताकि तुम सफल हो जाओ। (अलमापद पारा 6 आयत 35)

(ड़) जिन लोगों ने कुफ्र किया, यदि उनके पास वह सब कुछ हो जो धरती में है और उतना ही उसके साथ और भी हो कि वह उसे देकर कयामत के दिन यातना से बच जाए, तब भी वह उनसे कबूल नहीं किया जायेगा, उनके लिए दुखदायिनी यातना है। (अलमाइदा पारा 6 आयत 36)

(च) तुम्हारा इलाह (पूज्य प्रभु) अकेला इलाह है उसके सिवाय कोई इलाह नहीं। (इलक्करा 163)

(छ) दरमजहबे तरीकत स्वामी निशाने कुफ्रत।

संसार में धर्म ही एक ऐसा है जो सम्पूर्ण मानव जाति को समता-एकता के साथ उत्तम जीवन प्रदान कर सकता है।

आरे तरीके दिंदीचाल क अस्त च चस्ती।

– धर्म में देर करना धर्म के विरूद्ध है। एक फकीर को आलस्य से दूर रहकर कार्य करने के लिये उद्यत रहना चाहिए।

पारसी (हाफजी)

(ज) जिस बन्दे का एक भी स्वाँस बगैर नाम के खाली जाता है उससे खुदा, कयामत के दिन उसी तरह सवाल करता है जैसे पापी से। जिसकी सजा है हमेशा–हमेशा के लिये दोजख अर्थात् खुदा को हर स्वाँस में याद रखना ही धर्म है।

18. *भगवान आदि शंकराचार्य :–*

भगवान आदि शंकरचार्य के विचार में धर्म का स्वरूप–

अयं तू परमोधर्मः यद्योगेनात्म दर्शनम्

योग के द्वारा आत्मा (परमात्मा) का साक्षात्कार ही मानव मात्र का परम धर्म है।

पशोपशुं को न करोतिधर्मः प्राधित्शास्त्रोऽपि न च आत्म बोधः

– अर्थात् वह पशुओं से भी बढ़कर पशु है जो धर्म का आचरण नहीं करता है तथा जो शास्त्रों को भली प्रकार जानकर आत्मबोध को नहीं प्राप्त हुआ।

19. *मनुस्मृति :–*

(क) धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचतिनिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यम क्रोधो दशंक धर्म लक्षणम्।।

– धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध ये दस धर्म के लक्षण हैं।

(मनुस्मृति 6/92, पृष्ठ 491)

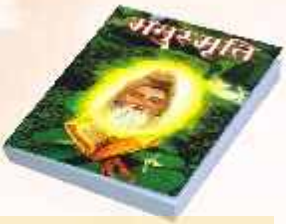

(ख) एक एवं सुहृद धार्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
– एक ही मित्र है धर्म, जो मरने के पश्चात् भी

धार्मिक व्यक्ति का कभी पतन नहीं होता।

साथ देता है।

20. संत कबीर जी :–

(क) जिहि घट प्रीत न प्रेम रस, पुनि रसना नहि राम।
ते नर इस संसार में उपजि भए बेकाम।।

कबीर ग्रन्थ पेज 65

(ख) सतगुरू की महिमा अनन्त, अनन्त किया उपकार।
लोचन अनन्त उघारियाँ,
अनन्त दिखावण हार।।

(ग) कबीर कुत्ता राम का
मोतिया मेरा नाऊं।
राम नाम की जेवड़ी
जित खींचै तित जाऊँ।।

(घ) सारा सूरा बहु मिलै,
घायल मिलै न कोई।
घायल ही घायल मिले तब राम भगति दृढ़ होई।।

(ड़) कबीर चेरा संत का, दासिन का परदास।
कबीर ऐसे हवै रह्या, ज्यू पाँऊ तलिघास।।

(च) कबीर देखत दिन गया, निसि भी देखत जाय।
वरहिन पिव पावै नहीं, जियरा तलफै भाय।।

(छ) विरहिन उठै गिर पड़ै, दरसन कारन राम।
मुवां पीछे देहुगे सो दरसन केहि काम।।

(ज) कै विरहण कै मींच दे, कै आपा दिखलाई।
आठ पहर का दाझना, मो पै सह्या न जाई।।

(झ) जीव शीव सब प्रगटे वे ठाकुर वे दास।
कबीर और जाने नहीं, एक राम नाम की आस।।

(ञ) राम नाम दुर्लभ अति,
औरन ते नहिं काम।

धार्मिक व्यक्ति सम्पूर्ण दुर्गुणों से दूर होता है।

आदि अन्त और युग युग, रामहि ते संग्राम।।

(ट) राम नाम जिन्ह चीन्हिया, झीना पिंजर तासु।
रेन न आवै नींदणा, अंग न जामे माँसु।।

(ठ) भक्ति भजन हरि नाम है दूजा दुख अपार।
मनसा वाचा कर्मणा, कबीर सुमरिन सार।।

21. गुरू नानक देव जी :–

(क) धृगु इवेहा जीवणा
जितु हरि प्रीति न पाई।
जितु कमि हरि बीसरै
दूजै लगै जाई।। गुरू ग्रन्थ पेज

(ख) कहतऊ पडतऊ सुणतऊ एक,
धीरज धामु धरणी धर टेक जतु,
सतु संजमु रिदै समाए।
चउथे पद कउ जे मतु पति आए।
साँचे निरमल मैलु न लागै, गुरु के सबदि भरम भव भागै।
सूरत, मूरति आदि अनूपु, नानक जाचै साँच सरूपु।।

(ग) अरथु दरवु जो किछु दीसै, संगि न कछहुँ जाई।
कहु नानक हरि हरि आराधहु, वन उपमा देउ कवन बडाई।।

(घ) बंधन ते मुक्ता घटि–घटि जुगता, कहि न सकउ हरि जैसा।
देख चरित नानक मनु मोहिओ, पूछै दीनु मेरो ठाकुरु कैसा।। सांरग छत महला गु0ग्र0सा0123 पद 1,3

(ड़) जेहि नर राम भगति नहीं साधी।
जनमति कस न मुइयो अपराधी।।

(च) धनु दारा सम्पत्ति सगल जिनि अपुनी करि मानि।
इनमें कछु संगी नहीं नानक सांची जानि।।

(छ) घटि–घटि में हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।

कहु नानक तिह भजु मना,
भवनिधि उतरहि पारि।।

(ज) सुख दुख जिह परसै नहीं,
लोभ मोह अभिमान।
कहु नानक सुनु रे मना सो मूरत
भगवान।।

(झ) तुम्हरी उसतति तुमते होई।
नानक अवरूं न जानसि कोई।।

(ञ) सरब धर्म महि स्रेसठ धरमु।
हरि का नाम जपिहु निरमल करमु।।

सगल करम महि उत्तम किरिआ। साधुसंगि दुरमति मलुहिरिया।
सगल उदम महि उदमु भला। हरि का नाम जपहु जीअ सदा।
सगल बानी महि अमृत बानी। हरि को जसु सुनि रसन बखानी।

गड्डी सुखमनी मतहा 5 पेज 266

राम नाम उर में बस्यो सो नर मुक्ता जानु।
सो नर हरि अन्तर नहीं, नानक साँची मानु।।

22. स्वामी विवेकानन्द जी :–

(क) सच्चे धर्म के क्षेत्र में कोरे पुस्तकीय ज्ञान का कोई महत्व नहीं, स्थान नहीं। (विवेकानन्द साहित्य भाग 10 पेज 268)

(ख) गिरजा, मन्दिर, मतमतान्तर विविध अनुष्ठान आदि तो पेड़ों की रक्षा के लिये लगाए गए घेरे के समान हैं, यदि पौधे को बढ़ाना है तो अन्त में इस घेरे को हटाना ही पड़ेगा। (भाग 6 पेज 61)

(ग) धर्म का अर्थ है आत्मा को आत्मा के रूप में उपलब्ध करना न कि जड़, द्रव्य के रूप में। (भाग 10 पेज 30)

महापुरूषों के उपदेश, सिद्धान्त एवं नियम सार्वभौम होते है। जिनका परिणाम दुखों से निवृत्ति दिलाकर शाश्वत शान्ति प्रदान करना है, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं साम्प्रदायिक नियम एकांगी भेददर्शी एवं तत्सामयिक होते हैं जो मात्र समस्याओं एवं विनाश का ही सृजन करते हैं।

(घ) कोई भी मत जो तुम्हें ईश्वर प्राप्ति में सहायता देता है, अच्छा है। धर्म ईश्वर की प्राप्ति है। (भाग 10 पेज 22)

(ड़) नास्तिक उदार हो सकता है, परन्तु धार्मिक नहीं। परन्तु धार्मिक मनुष्य को उदार होना ही चाहिए। (भाग 10 पेज 227)

23. स्वामी राम तीर्थ जी :–

धार्मिक वाद–विवाद में और झगड़े जो होते हैं, वे नगद धर्म पर नहीं होते, उधार धर्म पर होते हैं। नगद धर्म वह है जो मरने के बाद नहीं बल्कि वर्तमान जीवन से सम्बन्ध रखता है, उधार धर्म एतबारी अर्थात् अधिकार पर निर्भर होता है। उधार धर्म कहने के लिए नकद धर्म क र न ` क ` ि ल ए ।

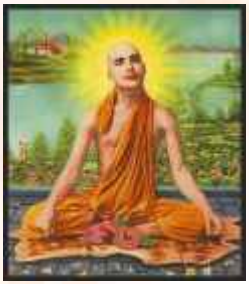

रामतीर्थ ग्रन्थावली भाग 6 पेज 10

Accept not a religion because it comes from a person whose character was the highest, often times people of the grandest character have failed in expounding the truth.

(In words of God realisation Part II page-2)

– किसी धर्म सम्प्रदाय को इसलिये न स्वीकार करो कि उसका संस्थापक बड़ा सच्चरित्र था, क्योंकि प्रायः सत्य की व्याख्या करने में बड़े से बड़े चरित्रवानों को सफलता नहीं मिली है।

Accept a thing and believe in a religion on its own merits. Examine it. Yourself shift it. Sell not your liberty to Budha, Jesus, Mohamad or krishna.

Part-II Page 29

–किसी वस्तु को स्वीकार और किसी धर्म पर विश्वास उसके गुणों के आधार पर करो। स्वयं उसको जाँचो परखो, उसका सूक्ष्म विश्लेषण करो। बुद्ध, ईसा, मोहम्मद या कृष्ण के हाथ अपनी स्वतन्त्रता न बेचो।

24. रूमी फारसी :–

चु तू पिनहा शवी अज अहले कुफ्रम
चु तू पैदा शवी अज अहले दीनम्।

– जिस समय तू मेरी दृष्टि से ओझल हो जाएगा, उस समय मैं विधर्मी और जिस समय तू मेरे सम्मुख आ जाएगा मैं धर्मात्मा हो जाऊँगा।

25. बुल्लाशाह :–

'बुल्ला' होर ने गलड़ियां
इक अल्ला अल्ला दि गल्ल।
कुज रौला पाया आलमा
कुज कागजां पाया झल्ल।।

– और कोई बातें हैं ही नहीं, केवल ईश्वर ईश्वर ही एक बात है। यह रौला तो कुछ इन विद्वानों ने और कुछ इन किताबों के झमेले ने मचा रखा है।

(बुल्लेशाह पृ0 507)

26. पानपदास :–

(क) जाके साधे राम मिलत सौंचा मत है सोई।
और मते सब झूँटे, पानप राम न मेंटे कोई।।

(ख) तन मन खोजे राम मिलत है, साँचा मत है सोई।
अन्तर सुरत लगाये, पानप हरि का दर्शन होईं।।

(पानप बोध पृ0 157)

27. सर्वोदय दर्शन :–

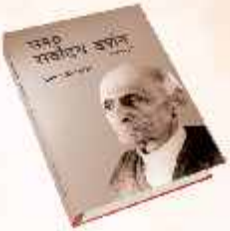

(क) दुनिया में जितने धर्म हैं, जिनके कारण विरोध होता है, सत्य नहीं होता है वह सब के सब अधर्म हैं।

(दादा धर्माधिकारी सर्वोदय दर्शन पेज 35)

वह व्यक्ति, संगठन एवं राष्ट्र धन्य है जिसने संघर्ष एवं भेदभाव रहित संस्कृति को जन्म दिया, ऐसी संस्कृति से मानव जाति का सम्पूर्ण विकास निश्चय होता है।

(ख) सम्प्रदाय में अदल बदल होता है, धर्मान्तर होता है। धर्म में धर्मान्तर जैसी चीज हो ही नहीं सकती। (स0 दर्शन पृ0 37)

28. बाणभट्ट :–

धर्मपरायणानां समीप संचारिण्य कल्याण सम्पदो भवति।

धार्मिक पुरुषों के पास कल्याण सम्पदाएं सदैव रहती हैं। (कादम्बरी पूर्व भाग पृ0 188)

29. गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार सभी धर्मों का आधार प्रेम है। (22 मार्च 1894 का पत्र पृ0 503)

30. जा विधि ईश्वर पाइए, सोई जानऊ पंथ।
अरू प्रवृत्ति है जहाँ लगि, ते सब जानु कुपंथ।।
(बनादास– साधक प्रेम छन्द 35 पृ0 506 विश्वसूक्ति)

31. स्वामी राम कृष्णानन्द के मतानुसार ''धर्म वहाँ प्रारम्भ होता है जहाँ विज्ञान समाप्त होता है।''

32. ''एक एवं सहृदय धर्मो निधनेइप्यनुयाति यः
शरीरेण संभ नाशं सर्वमन्यच्य गच्छति।।

– धर्म ही एक ऐसा मित्र है जो मरण के अनन्तर भी पीछे–पीछे जाता है और सब देह के साथ विनष्ट हो जाता है। अर्थात् धर्म के अतिरिक्त अन्य सभी वस्तुएं शरीर के साथ ही नष्ट हो जाती हैं। बल्लल कवि भोज प्रंबन्ध 32 पृ0 492

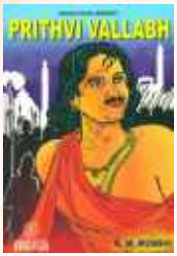

धर्म एकान्त में भी रक्षा करता है, पाप से बचाता है।

33. *आयुस्ता रूष्य वित्ताद्यं विधुच्चं चलमीतिरम्।*

धर्मोऽचल स्ततो नित्यं भवेद् धर्म वरो जनः।।

– आयु, यौवन तथा वित्तादि विद्युत के समान चँचल कहे गये हैं। धर्म अचल है अतः व्यक्ति को सदा धर्म परायण होना चाहिए।

अचित्यानन्द वर्णी (श्री हरिलीला कल्पतरू 7/45/29 पृ0 492)

34. ***धर्मस्य सुक्ष्मा गतिः।***

– धर्म की सूक्ष्म गति है। अज्ञात पृ0 492

35. नारायणनुं नामज लेताँ वारे तेने तजिए रे।

मनसा वाचा कर्मणा करीने लक्ष्मी बरने भजिए रे। नरसी भगत

36. नहिं चाहौं साम्राज्य सुख, नाहिं स्वर्ग–निर्वान।
जन्म जन्म निज धर्म पै हरषि चढावौ प्राण।।

वियोगि हरि (वीर सतसई छण पृ0 498 शतक 100)

37. सारे ही धर्म एक समान बात कहते हैं, मनुष्यता के ऊँचे गुणों को विकसित करना ही धर्म का उद्देश्य है। हरिकृष्ण प्रेमी (शक्ति साधना पृ0 498)

38. धर्म पर जो मलिन खोल चढ़ गई, उसे फाड़कर फेंक देना होगा। यह काम वही कर सकते हैं जिन्हें धर्म में आस्था है। सच्चे

धर्माचार्यों को इस दिशा में निर्भीक, निर्लोभ, निःस्वार्थ और निर्मम होकर बढ़ना चाहिए। लोकापवाद की परवाह न करके धर्म की परिशुद्धि करनी चाहिए। धर्म को मनुष्य समाज के सर्जन और परिरक्षण का पुष्ट साधन बना सकते हैं।

सम्पूर्णानन्द (समाजवाद 35–36)

39. ***दीन अज परहेजगारां कमाल याबद।***

– धर्म संयमियों से पूर्णता पाता है।

सेख सादी (गुलिस्तां आठवां अध्याय)

40. ***महात्मा गांधी के मतानुसार :–***

(क) धर्म का भूषण वैराग्य है, वैभव नहीं।

(ख) शुद्ध धर्म अचल है, रुढि समयानुसार बदली जा सकती है।

(महादेव भाई की डायरी भाग–1 पृष्ठ 288)

(ग) जाति का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है।

(Removal of Untouchability)

41. ***एक्के धम्मे होन्तंएण।***
इन्दा देव वि सेव करन्ति।।
धम्म–विहूण हो माणुस हो
चंडाल विपगणएंण नन्ति।।

– एक धर्म के रहने से इन्द्र और देव भी सेवा करते हैं। धर्म रहित व्यक्ति के घर में चाण्डाल भी पैर नहीं रखता है।

स्वयम्भूवदेव (पडमयरिउ 6/14/9, पृष्ठ 493)

भगवान विष्णु (लाखों वर्ष पूर्व)
भगवान का विराट रूप हृदय में
देखा जाता है, साधनगम्य है।

भगवान राम – रामायण (त्रेता-लाखों वर्ष पूर्व-रामायण)
एक परमात्मा के भजन के बिना
जो कल्याण चाहता है, वह मूढ़ है।

श्रीकृष्ण – भगवद् गीता (5200 वर्ष पूर्व)
परमात्मा ही सत्य है, ॐ का जाप करें।

महात्मा जरथुस्त्र –अवेस्ता
2700 वर्ष पूर्व-पारसी पंथ
अहुरमज्दा एक ईश्वर ही सत्य है।

मसीह ईसा – बाइबिल (2000 वर्ष पूर्व ईसाई पंथ)
एक ईश्वर की शरण, श्रद्धा और साधना।

हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु – कुरान (1400 वर्ष पूर्व-इस्लाम पंथ)
ज़र्रे-ज़र्रे में व्याप्त खुदा (ईश्वर)
के सिवाय कोई पूज्यनीय नहीं है।

www.yatharthsandesh.com

महावीर -जैन ग्रंथ (2600 वर्ष पूर्व-जैन पंथ)
आत्मा ही सत्य है। कठोर तपस्या से
इसी जन्म में जाना जा सकता है।

गौतम बुध - महापरिनिब्बान सुत्त (2500 वर्ष पूर्व)
मैंने उस अविनाशी पद को प्राप्त किया है,
जिसे पूर्व महर्षियों ने प्राप्त किया था। यही मोक्ष है।

सन्त कबीर (600 वर्ष पूर्व)
राम नाम अति दुर्लभ, औरे ते नहिं काम
आदि अन्त औ युग-युग, रामहि ते संग्राम।।

तुलसी दास - रामचरित मानस (600 वर्ष पूर्व)
व्यापक एक ब्रह्म अविनासी,
सत चेतन घन आनन्द रासी।

गुरूनानक-गुरूगन्थ साहिब
(500 वर्ष पूर्व सिख पंथ)
एक ओंकार सद्गुरू प्रसादि।

स्वामी श्री परमानन्द जी (सन् 1911-1969 ई.)
भगवान जब कृपा करते हैं तो शत्रु मित्र हो जाते हैं,
विपत्ति सम्पत्ति हो जाती है। भगवान सर्वत्र देखते हैं।

www.yatharthsandesh.com

सभी महापुरुष एक मत

ईश्वर की जो परिभाषा अनादिकाल से भारतीय ऋषियों ने दी उसी को ५००० वर्ष पूर्व भगवान श्री कृष्ण, २५०० वर्ष पूर्व भगवान बुद्ध एवं भगवान महावीर स्वामी, २००० वर्ष पूर्व ईसा मसीह, १४०० वर्ष पूर्व मोहम्मद साहब तथा ५०० वर्ष पूर्व गुरु नानक, कबीर आदि महापुरुषों ने दी।

दुनिया के सभी महापुरुष एक मत है तथा ५२०० वर्ष पूर्व प्रसारित गीता के ही संदेशवाहक है। गीता मानवमात्र का अर्तक्य आदि धर्मशास्त्र है।

लेखक की कलम से...

संसार का प्रत्येक मनुष्य विकास चाहता है और उस दिशा में अग्रसर भी है। विकास करते–करते मनुष्य चाँद पर पहुँचकर वहाँ रहने की योजना बनाने लगा। दूसरे अनेक ग्रहों की खोज में उलझा हुआ है। जमीन पर चलने वाला मनुष्य आकाश पर उड़ने लगा। महीनों की यात्रायें घंटों में करने लगा, लेकिन मनुष्य की मूल समस्या ''दुःख'' आज भी अपनी जगह पर है। भौतिक क्षेत्र की बड़ी से बड़ी उपलब्धि दुःख को मिटाने या रोकने में सक्षम नहीं है।

संसार में सर्वप्रथम भारतीय ऋषियों ने मानव जाति की इस मूल समस्या का समाधान प्राप्त किया तथा उसे प्रत्येक मानव तक पहुँचाने के लिये धर्म शास्त्रों के रूप में लिपिबद्ध किया। जिसे वेद नाम दिया गया। कालान्तर में कुछ स्वार्थी शिक्षाविदों द्वारा शोषण एवं प्रतिनिधित्व की भावना से सामाजिक व्यवस्था एवं परम्पराओं का समावेश करके पवित्र शास्त्रों को विकृत करने का कुप्रयास किया गया। यहीं से समूह एवं संगठनों का अभ्युदय हुआ जो मानव जाति के लिए एक अभिशाप है। हीन एवं श्रेष्ठ–अश्रेष्ठ की भावना में बाँधकर संघर्ष एवं पतन के मार्ग पर चलने के लिये प्रत्येक समूह को मजबूर करता है। प्रतिनिधित्व की दूषित भावना द्वारा प्रत्येक समूह को मत एवं सिद्धान्तों के उल्लंघन के दुष्परिणामों का भय दिखाकर भेड़ों की तरह अपने–अपने बाड़े में कैद कर रखा गया है। जिसका दुष्परिणाम आज सम्पूर्ण मानव जाति के समक्ष है। प्रत्येक राष्ट्र इस समस्या से जूझ रहा है।

आज प्रतिनिधित्व को लेकर समाज में, परिवार में आये दिन समस्यायें पैदा होती रहती हैं। प्रनिनिधित्व सामाजिक हो या धार्मिक गलत हाथ में जाने से समाज या धर्म का पतन हो जाता है अर्थात् मनुष्य वास्तविकता से भटक कर दूर जा खड़ा होता है। सैकड़ों मत मतान्तर एवं अनेकों सामाजिक संगठन जिन्हें पार्टियों एवं सम्प्रदाय का रूप दिया जाता है व्यक्तिगत प्रतिनिधित्व की दूषित भावना का ही परिणाम है। जबकि देश के प्रत्येक प्रतिनिधि का एक ही उद्देश्य है, एक ही भावना है देश का विकास। देश का विनाश किसी प्रतिनिधि का उद्‌देश्य नहीं है।

धार्मिक व्यक्ति ईश्वर की सहभागिता में जीवन जीता है।

फिर भी अनेकों संगठन एक दूसरे के विरोध में खड़े हैं। सब मिलकर विकास क्यों नहीं करते? इसी प्रकार सभी धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधियों का लक्ष्य एक परमात्मा ही है क्योंकि ईश्वर के अतिरिक्त आत्मा के उद्धार एवं विकास का अन्य कोई उपाय एवं मार्ग नहीं है। फिर भी आपस में वैमनस्यता एवं श्रेष्ठ–अश्रेष्ठ की भावनाओं द्वारा मनुष्य को दूषित करने का उपक्रम चल रहा है।

जबकि वैदिक ऋषियों का एवं अन्य सभी सत्पुरुषों का उद्घोष है कि जब तक मनुष्य ईश्वर को नहीं प्राप्त कर लेता तब तक वह संसार में कुछ भी प्राप्त कर ले, कुछ भी बन जाये दुःखों से छुटकारा नहीं प्राप्त कर सकता। संसार की सम्पूर्ण उपलब्धि का अंतिम परिणाम दुःख ही है। ईश्वर दर्शन सम्पूर्ण संकल्पों के अभाव का परिणाम है। आज तक तथा आगे भी कोई भी साधन बिना संकल्पों के अभाव के न तो ईश्वर को पाया है न पायेगा तो यह मत मतान्तर सम्प्रदाय बनाकर धार्मिक प्रतिनिधि समाज को कौन सी दिशा दे रहे हैं?

अराजकता के बढ़ते कदमों को रोकने के लिए प्रत्येक राष्ट्र को इस समस्या से मुक्त करने के लिये मानवीय गुण अत्यावश्यक है। मानवीय गुणों का आधार मात्र एक धर्म है जो सृष्टि में एक है। ईश्वरीय गुणों को हृदय में अभिभूत करने का प्रयास धर्माचरण है। सृष्टि में ईश्वर एक है इसलिये धर्म एक है। आज तक किसी धार्मिक व्यक्ति को चाहे वह कहीं भी पैदा हुआ हो कैसे भी रूप रंग का हो, अमानवीय कदम उठाते नहीं देखा गया न ही सुना गया क्योंकि धर्म सभी मानवीय दुर्बलताओं से मनुष्य को दूर रखता है।

सामाजिक परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों को धर्म का नाम देकर मनुष्य ने उन महान विचारकों का घोर अपमान किया है जिन्होंने समूची मानव जाति को प्रेम और सौहार्दपूर्ण जीवन जीने का संदेश दिया है।

स्वर्ग का लोभ एवं नर्क का भय दिखाकर कल्पित सिद्धान्तों को मनुष्यों पर थोपने वाले क्या मानव जाति के हितैषी कहे जा सकते हैं? जिस पर चलकर मनुष्य दुःख एवं समस्याओं से कभी नहीं छूट सकता।

न कहीं स्वर्ग है, न कहीं नर्क, सैकड़ों राकेट एवं उपग्रह सौरमण्डल

का चक्कर लगा रहे हैं। कहीं तो स्वर्ग मिलता।

भगवान श्रीकृष्ण ने गुणों के आधार पर मनुष्यों की ही दो श्रेणी (देवता एवं असुर) बताकर पृथ्वी पर ही स्वर्ग एवं नर्क को इंगित किया है। इसलिये मानव जाति को कल्पित सिद्धान्तों में उलझाये रखना महान पाप है।

विश्व में सैकड़ों सिद्धान्त सैकड़ों प्रकार की विचारधारा हैं जो केवल संघर्ष एवं पतन की तरफ ले जाती हैं। केवल ईश्वर से जोड़ने वाली विचारधारा मनुष्य की उन्नति का मार्ग है।

कुछ लोगों का मानना है कि जन्म दुबारा नहीं होता। खुदा कयामत के दिन सबका फैसला करता है। इसलिये कब्र बनाते हैं, लेकिन वह दूसरे पहलू पर विचार नहीं करते कि खुदा ने जब जन्म दिया तो किसी को गोरा, किसी को काला, किसी को सुन्दर, किसी को कुरूप, किसी को रोगी, किसी को स्वस्थ, किसी को धनी, किसी को निर्धन। यह कैसा खुदा का न्याय? ऐसा खुदा ने किस आधार पर किया? कर्म का फल भोगने के लिये जीव को बार–बार विविध शरीरों में जन्म लेना पड़ता है। कयामत के दिन खुदा कब्र वालों का न्याय करता है, लेकिन हजारों लोग तूफान में लापता हो जाते हैं, युद्ध में लापता हो जाते हैं उनका न्याय कौन करता है? जबकि खुदा संसार के हर प्राणी के साथ न्याय करता है। जीवन यापन एवं शरीरों को सुरक्षित रखने की प्रत्येक समूह के अपने–अपने तौर तरीके हैं। इससे भगवान का कोई संबंध नहीं है।

यह परम्परा मनुष्य के दूषित, घृणित एवं संकीर्ण विचारों को उजागर करती है कि धार्मिक स्थलों में कौन कहाँ तक जाये? आज यही भावना वैमनस्यता एवं भेदभाव का कारण बनी हुई है। जबकि ईश्वर सबके हृदय में निवास करता है। हृदयस्थ ईश्वर से मनुष्य को कैसे–कैसे वंचित किया जा सकता है। सम्पूर्ण मानव जाति को ईश्वर चिन्तन का अधिकार भगवान श्री राम ने दिया।

पुरुष नपुंसक नारि व जीव चराचर कोय।
सर्व भाव भज कपट तज मोहि परम प्रियसोय।।

चराचर जगत में कोई भी मेरा चिन्तन करके मेरा प्रिय हो सकता है।

भगवान श्रीकृष्ण ने भी इसका समर्थन किया–

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूदास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्।। (गीता 9/32)

स्त्री, वैश्य तथा शूद्र सभी मेरा चिन्तन करके परम गति अर्थात् मेरे धाम को प्राप्त होते हैं।

अछूत की गन्दगी में बैठी मक्खी मंदिर में भगवान के ऊपर बैठ जाये। भोजन में, दूध में, घी में गिर जाय फिर भी हम पवित्र हैं, भगवान परम पवित्र है जो उनका सुमिरन करता है वह भी परम पवित्र हो जाता है।

स्वपच खबर खस यमन जड़ पामर कोल किरात।
होत परम पावन तुरत नाम जपत विख्यात।।

लेकिन फूट डालने वालों की बुद्धि एवं मनुष्य का दुर्भाग्य। कुत्ता मंदिर में चला जाये, चिड़िया घोंसला बनाले, मक्खी चली जाये, लेकिन देव दुर्लभ मानव तन मंदिर में न जाय? यह कैसी बुद्धिमानी है?

उन्हीं भगवान के चरणों से गंगा निकली परम पवित्र। जिसे शंकर जी अपने सिर पर धारण करते हैं। उन्हीं चरणों से शूद्र निकला परम अपवित्र, यह कैसा गुण है? चरणों का दोष है या बुद्धि की विक्रतता। भगवान भोले नाथ के गण हैं भूतप्रेत जो सदा साथ रहते हैं। उन्हीं के मंदिर में मनुष्य नहीं जा सकता। क्या भूत प्रेत मनुष्य से श्रेष्ठ हैं? यह भूतप्रेत शिव को अपवित्र नहीं कर सकते, लेकिन मनुष्य के जाने से भगवान अपवित्र हो जाते हैं। यह कैसी बुद्धिमानी है, समझदारी है? ऐसे ही सैकड़ों विकृतियों के बीच फँसा मनुष्य कल्याण पथ में भ्रमित हो गया है। हम सभी को एक ऐसा मार्ग चाहिये जो मनुष्य–मनुष्य की दूरी एवं भगवान की दूरी को मिटा सके, जहाँ मनुष्य का सर्वागीण विकास है, जहाँ सर्वथा भय का अभाव है वह निःसंदेह है। योग मार्ग जिसका क्रमशः निरूपण किया जायेगा। पाठक बन्धुओं को चिन्तन का लाभ मिले। अपने जीवन एवं समय का सुदपयोग कर सके। यही हमारा सत्प्रयास है और इस सत्यप्रयास में आपका सहयोग अपेक्षनीय है।

भाषा, भेष, देश एवं प्रान्त से चिपके रहने वाले के पास
कभी स्वतंत्र विचार नहीं हो सकते, ना ही वे कभी भेभाव से मुक्त हो सकते हैं।
इन विचारों से युक्त मन में सुख शान्ति कहाँ है?

सभी महापुरूष एक मत

सृष्टि में मनुष्य किसी न किसी परम्परा में जन्म लेता है। कुछ परम्परायें तत्सामयिक होती है जो केवल तत्सामयिक समाज के लिए ही उपयोगी होती हैं। समय आने पर ये परम्परायें अपने आप बदलती रहती हैं, लेकिन कुछ सिद्धान्त शास्त्र सम्मत होते हैं जो मानव हित में होते हैं और ऐसे सिद्धान्त चिरस्थाई होते हैं। शास्त्र में लिपिबद्ध सत्य को बौद्धिक स्तर से नहीं समझ सकते। बौद्धिक स्तर से समझने का कुपरिणाम आज समूचे विश्व के समक्ष है मनुष्यों का हजारों टुकड़ों में विभाजित होना।

सभी बुद्धिजीवी शास्त्रों का अर्थ अपने–अपने बौद्धिक स्तर से कर रहे हैं। इसलिये एक शास्त्र का अनेकों प्रकार से अर्थ किया जाता है। कोई भी विद्वान एक–दूसरे से सहमत नहीं है। तभी तो उसी शास्त्र के अन्य भाष्य की जरुरत पड़ी। महापुरुषों ने जिस सत्य को त्याग एवं तपस्या द्वारा जानकर संसार के लोगों को उस पर चलकर दुःख से सर्वथा छूटने का संदेश दिया। बुद्धिजीवियों द्वारा भौतिक शिक्षा प्राप्त करके उन शास्त्रों के साथ खिलवाड़ करके कई प्रकार से उनका अर्थ करके बौद्धिक उन्माद एवं विलासिता का परिचय देकर सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षति के उत्तरदायी हैं।

सृष्टि में जितने भी पशु–पक्षी हैं सबकी बोली, भाषा एक है। भिन्नता है तो केवल मनुष्यों में भारत में पाया जाने वाला पशु या पक्षी विश्व में कहीं भी हो सबकी भाषा एक ही है, स्वभाव एक है, ये नहीं कि भारत का शेर हिंसक होता है और अन्य जगह के अहिंसक हों, या शाकाहारी हों। सृष्टि में केवल मनुष्य अपने में भिन्नता बना लेता है। यही भिन्नता मनुष्य के वैमनस्यता, दुःख एवं पतन का कारण बन जाती है। लेकिन ईश्वर पथ पर चलकर उसकी अनुभूति प्राप्त करने वाला विश्व में कहीं भी जन्मा है उसने उसी सत्य को कहा है जिस सत्य को करोड़ों वर्ष पूर्व ऋषियों ने कहा। यम, नियम, संयम के द्वारा सत्य की अनुभूति का अनादिकाल से विधान रहा है। इसका समर्थन अपनी वाणियों में, अपने शास्त्रों में प्रत्येक महापुरुष ने किया है।

सृष्टि में जैसे पशु–पक्षियों की भाषा एक है। उनका जीवन भेद–भाव

मनुष्य-मनुष्य के बीच किसी प्रकार की सीमा रेखा बनाना संघर्ष को जन्म देना है। जब तक मानव जाति विभाजन रहित नहीं होगी तब तक संघर्ष होते रहेंगे।

रहित है। उसी प्रकार जो ईश्वर एक है उसकी अनुभूति प्राप्त करने वाला विश्व के किसी कोने में उपलब्ध महात्माओं की वाणी एक है, सिद्धान्त एक है, उनके सिद्धान्त भेद रहित हैं। सत्य तो एक है, परमात्मा। संसार के प्रत्येक विचारक ने उसी एक ही सत्य की अनुभूति प्राप्त करके अपने जीवन को कृतार्थ किया तथा संसार के लोगों को भी उस पर चलाकर कृत्य–कृत्य करने का प्रयास किया।

सभी महापुरुषों का सीधा सा एक ही रास्ता, एक ही उद्देश्य कि किसी प्रकार मनुष्य अपनी इन्द्रियों एवं मन पर अधिकार प्राप्त कर अपने अन्तःकरण को विचार शून्य, संकल्प शून्य करके अपने वास्तविक स्वरुप की प्राप्ति करके समाज में एक महान आदर्श का हेतु बने। संसार में उसका जीवन दर्शन सबके हृदय में सूर्य की तरह प्रकाशित होकर संसार को अज्ञानान्धकार से बहुत दूर ले जायें जहाँ फिर कभी अँधेरा उसके जीवन में न आने पाए। यही सत्प्रयास उन सत्पुरुषों का एवं उनके प्रतिपादित धर्मशास्त्रों का रहा है, लेकिन सभी धर्मशास्त्र बौद्धिक उन्मादिता के शिकार बने जिस कारण समाज में विकृतियाँ आईं। जिससे मनुष्य सत्य को भी कई प्रकार से तथा कई रुपों से ग्रहण करने का प्रयास करने लगा। यही धारणाएँ कालान्तर में परम्पराओं का रुप लेकर मनुष्य को वास्तविकता से दूर कर दिया। इन्हीं परम्पराओं को कालान्तर में जातियाँ, वर्णों के रुप में देखा जाने लगा। शास्त्रों एवं भगवान का बँटवारा करके मनुष्य ने अपने संकीर्ण विचारों को उजागर किया है। ठोस एवं कड़े सिद्धान्त जो मनुष्य को उसके कर्तव्य पर स्थिर रखते हैं। शुरुआत में अटपटे एवं कठिन अवश्य प्रतीत होते हैं, लेकिन भविष्य दीर्घकाल तक सुरक्षित एवं व्यवस्थित रहता है।

कच्ची जमीन से होकर गुजरने वाली सड़कों की अपेक्षा चट्टानों से होकर गुजरने वाली सड़कें अधिक टिकाऊ और सुरक्षित होती हैं। कर्तव्य के प्रति सजग हुए बिना कोई भी प्रतिनिधि अपने नियमों के प्रति कठोर नहीं हो सकता। बिना कठोरता के कोई भी सिद्धान्त चिरस्थाई एवं मानवहित में नहीं हो सकता। जिसमें कटुता, राग–द्वेष एवं वैमनस्यता की वृद्धि हो, भय हो ऐसे नियमों के प्रति उदासीनता ही मानवहित में है। कठोरता दिखाने वाले ऐसे

नियमों के प्रति कठोर दिखने वाले प्रतिनिधि को तथा उससे जुड़े हुए श्रेष्ठ समाज को भविष्य में शर्मिन्दा न होना पड़े। इस कर्तव्य को समझते हुए वैमनस्यता रहित सिद्धान्तों पर समाज को चलाना प्रतिनिधि का प्रथम दायित्व है। मानव जाति के विकास के लिए सर्वप्रथम संकीर्ण बनाने वाले सिद्धान्तों एवं विचारों को त्यागना होगा। मानव जाति के बीच किसी भी प्रकार की दीवार उसे संकीर्ण बनायेगी। पतन एवं राग–द्वेष के मार्ग में ले जायेगी जिसके फलस्वरुप मनुष्य को सुख एवं शान्ति से वंचित रहना पड़ेगा है। **''परम्पराएं मनुष्य को तोड़ती है जबकि धर्म मनुष्य को जोड़ता है।''** धार्मिक विचार द्वारा ही मनुष्य–मनुष्य के बीच सोहार्द एवं प्रेम का वातावरण बना सकती है। आज आवश्यकता है धर्म के वास्तविक रुप को समझने की न कि परम्पराओं को ही धर्म समझने की। 'यथार्थ संदेश' यथार्थ रुप दर्शाने का ही प्रयास है। जिन श्रेष्ठ विचारकों ने संसार के परिणाम को समझकर योगपथ का आश्रय लेकर योग के परिणाम में परमात्मा से संयुक्त अन्तःकरण वाले होकर, उसी भाव को प्राप्त किया, सभी संत महापुरुष कहलाए। ऐसे किसी भी महापुरुष को अपना आदर्श मानकर विश्व का कोई भी व्यक्ति अपने जीवन के सम्पूर्ण दुःखों से तथा समस्याओं से सर्वथा छुटकारा पा सकता है।

संसार में जितने भी संगठन हैं, वह किसी न किसी महापुरुष के नाम से एक संगठित समूह है। मनुष्य किसी न किसी महापुरुष से जुड़ता तो चला गया, उनके द्वारा बनाए तत्सामयिक सामाजिक नियमों को तो पकड़ लिया, लेकिन उनकी आन्तरिक साधना एवं उपलब्धि को नहीं पकड़ सका। इसलिए भिन्न–भिन्न परिस्थितियों के कारण सामाजिक नियमों में भिन्नता स्वाभाविक है। इस भिन्नता के कारण मतभेद स्वाभाविक है। सामाजिक नियमों को ही महापुरुष के मूल सिद्धान्त मानकर मनुष्य छोटे–छोटे दायरों में सिमट गया। कालान्तर में यह सिमटा हुआ समाज, सम्प्रदाय, मजहब एवं जातियों के रुप में परिणित होकर एक–दूसरे को हेय दृष्टि से देखने के कारण आपस में राग–द्वेष करके अपने–अपने सिद्धान्तों को श्रेष्ठ मानकर एक–दूसरे पर शक्ति के बल पर उसे थोपने का प्रयास करने लगे। शक्ति के बल पर एक–दूसरे पर अपने सिद्धान्त को थोपने की परम्परा ने संघर्ष का रुप लेना शुरु कर दिया।

किसी दुखित प्राणी को देखकर जिसके हृदय में करूणा का संचार होता है वह धार्मिक ही है।

आज उस संघर्ष का व्यापक स्वरूप देखा जा सकता है।

शक्ति एवं षडयंत्र के बल पर अपने सिद्धान्त को दूसरे समूह पर थोपने वालों से यदि पूछा जाए कि जिस सिद्धान्त को आप दूसरों के ऊपर थोपना चाहते हैं क्या उस सिद्धान्त से आपका समूह समस्या मुक्त, तनाव मुक्त एवं दुख मुक्त जीवन जी रहा है? शक्ति के बल पर अपने सिद्धान्त को दूसरे पर थोपकर आप उसे क्या देना चाहते हैं? जबकि संसार के सभी सामाजिक सिद्धान्तों का परिणाम दुख है। जिन महापुरुषों के नाम पर समाज संगठित है उन महापुरुषों का यह उद्देश्य कदापि नहीं था कि लोग आपस में उलझकर अपनी सुख–शान्ति एवं समृद्धि को खो दें।

संसार के प्रत्येक महापुरुष का एक ही लक्ष्य एवं उद्देश्य था सुख और शान्ति जो संसार के भोगों के साथ कभी प्राप्त नहीं हो सकती है।

सभी महापुरुष किसी न किसी सामाजिक व्यवस्था एवं परम्परा में जन्म लेकर उसके परिणाम पर भली प्रकार विचार एवं मनन करके उस परम्परा से अपने आप को अलग करके सत्य के दर्शन, स्पर्श एवं विलय के साथ सम्पूर्ण परम्पराओं से, समस्याओं से, चिन्ताओं से एवं दुखों से अपने आपको मुक्त पाया।

प्रत्येक महापुरुष ने सत्य की अनुभूति के साथ अपने इस अनुभव से संसार के समस्त लोगों को परिचित कराकर उससे लाभान्वित होने का आह्वाहन किया। साथ ही अपने समय के अस्त–व्यस्त समाज को एक व्यवस्थित एवं मर्यादित रखने के लिए कुछ सामाजिक नियम बनाकर समाज को व्यवस्थित एवं मर्यादित रूप दिया ताकि मनुष्य इन भोगों में ही न उलझा रहे जहाँ दुख के सिवा कुछ भी नहीं है। बल्कि उस सत्य की अनुभूति पाकर शाश्वत सुख एवं शान्ति प्राप्त करें जहाँ मानवीय दुर्बलताओं का सर्वथा अभाव है।

संसार की प्रत्येक वस्तु तथा श्रेष्ठतम भोग एक दिन मनुष्य के दुःख का कारण बनते हैं। इन समस्त दुखों से तथा समस्याओं से सर्वथा छुटकारा ईश्वर दर्शन के साथ ही सम्भव है। जब तक मनुष्य ईश्वरीय ज्ञान से वंचित है तब तक दुखों से छूटना सम्भव नहीं है। आंतरिक विकार संसार की तरफ

प्रेरित करते हैं। ईश्वरीय ज्ञान के साथ ही यह विकार सर्वथा निर्मूल होते हैं। ईश्वर एक व्यापक सत्ता है, लेकिन सद्गुरु के माध्यम से उस व्यापक सत्ता की अनुभूति समस्त जिज्ञासुओं को हृदय देश में प्राप्त हुई है। इस सत्य को संसार के प्रत्येक महापुरुष ने स्वीकार किया है। संसार के भोगों के लिए एक–दूसरे के साथ छल करना तथा एक–दूसरे से उलझना अज्ञानता है, दुख का कारण है। इनका निवारण ही मानव तन की सर्वोपरि उपलब्धि है। इस सत्य से किसी महापुरुष ने इंकार नहीं किया है।

सर्वप्रथम वैदिक ऋषियों की वाणी को प्रमाण रुप में देखेंगे यथा–

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः।
तास्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये, के चात्म हनो जनाः।।

शुक्ल यजुर्वेद अ.40/

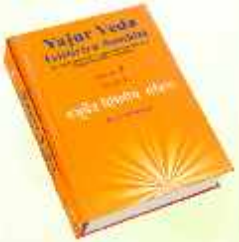

जिसने योग साधना द्वारा ईश्वर दर्शन के साथ आत्मा का उद्धार नहीं किया। ऐसे आत्मा की हत्या करने वाले मनुष्य असुरों के लोक में जाते हैं, जो अंधकार एवं दुख से आवृत हैं। शुभ कर्मों के नाम से कुछ भी करते रहो, लेकिन जब तक ईश्वर दर्शन के मार्ग पर चलकर दर्शन और विलय नहीं पाया तब तक आसुरी लोक सुरक्षित है। उस ईश्वर को हम कहाँ खोजे? इस पर कहते हैं कि वह ईश्वर समस्त भूत–प्राणियों के हृदय में निवास करता है। उसे तत्वदर्शियों ने अत्यन्त सूक्ष्म बुद्धि के द्वारा देखा है। यह वैदिक ऋषियों की अनुभूति है। ऐसे ऋषियों के माध्यम से उस ईश्वर को कोई भी देख सकता है। ईश्वर दर्शन की विधि संसार में एक ही है इसे तत्व दर्शियों से समझा जा सकता है। इसलिए वैदिक ऋषियों ने कहा कि ब्रह्मनिष्ठ वेदज्ञ महापुरुष से उस ज्ञान को प्राप्त करो जिससे ईश्वर दर्शन के साथ समस्त दुखों से छुटकारा मिलता है। हृदय में स्थित ईश्वर की अनुभूति वह तत्वदर्शी ही करायेंगे। दुखों से तथा मृत्यु से छूटने का संसार में अन्य कोई मार्ग नहीं है। जब तक ऐसे ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु नहीं मिलते तब तक ईश्वर–दर्शन के नाम पर, कल्याण के नाम पर अनेकों प्रकार के सिद्धान्त

मनुष्य को दिग्भ्रमित करते रहेंगे।

येष सर्वेषु भूतेषु गुढोऽऽात्मा न प्रकाशयते।
द्रश्यते त्वग्रयया बुद्धया सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः।।

अथर्ववेद

तद्धिज्ञानार्थ स गुरुमेवाभि गच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठं।।
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽनाय।।

यजुर्वेद अ. 31/18

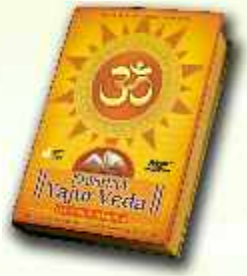

बहुत से विद्वान समस्त दर्शन शास्त्रों का अध्ययन करके इसी को आत्मदर्शन या ज्ञान समझ लेते हैं। वैदिक ऋषियों का कहना है कि विश्व का सबसे अधिक कुशाग्र बुद्धि वाला तर्क से ईश्वर को नहीं प्राप्त कर सकता है। वाणी को सजाकर प्रस्तुत करने की कला द्वारा भी ईश्वर को नहीं प्राप्त किया जा सकता है। उसकी अनुभूति सर्वथा विकार रहित मन में ही सम्भव है और मन को विकार रहित बनाने का साधन ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु के पास है। यदि ऐसा नहीं है तो समस्त दर्शनशास्त्रों का, वेदों का अध्ययन व्यर्थ है। क्या दवा का नाम रटकर कोई रोग मुक्त हो सकता है।

ऋचों अक्षरे परमे व्योमन,
यस्मिन देवा अधिक विश्वे निषेदुः।
यस्तं न वेद किमृचा करिष्यति।
य इत् तद् विदुस्त इमे समासते।।

ऋगवेद मण्डल।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेध्या न बहूना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनू स्वाम्।। **कठोपनिषद (कृष्ण यजुर्वेद)**

गुरूजनों का उपदेश संकीर्णता से मुक्त होता है। संकीर्णता मानव जाति के लिए अभिशाप है पतन एवं संघर्ष का उद्गम है।

वैदिक ऋषियों की तरह भगवान श्रीराम ने भी सद्गुरु विश्वामित्र के माध्यम से योग की पराकाष्ठा में ईश्वरीय अनुभूति प्राप्त करने के बाद समस्त अयोध्यावासियों को संबोधित करते हुए कहा कि यह देव दुर्लभ मानव तन विषयों को भोगने के लिए नहीं मिला है। अपितु आत्मा के उद्धार के लिए एक श्रेष्ठ साधन है। यदि इस शरीर से किसी ने पुरुषार्थ करके स्वर्ग जैसे भोग भी प्राप्त कर लिए तो भी कुछ नहीं है। यह समस्त भोग स्वल्प हैं एक दिन दुख का कारण बनेंगे। राजा नहुष, इन्द्र पद पाकर भी अजगर योनि में गये। ईश्वर ने कृपा करके मनुष्य शरीर अमृत पान करने के लिए दिया है। इस मानव तन से ईश्वर प्राप्ति का प्रयास न करने वाले आत्मा की हत्या करने वालों का मैं ही काल हूँ। आत्मा की हत्या करने वाले अधम योनियों को प्राप्त होते हैं।

बडे भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थनि गावा।।
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा। पाइ न जेहि परलोक संवारा।।
सो परत्र दुख पावई शिर धुन-धुन पछताइ।
कालहि कर्महि ईश्वरहि मिथ्या दोष लगाइ।।
जो न तरइ भवसागर नर समाज अस पाइ।
ते कृत निन्दक मंद मत आत्माहन गति जाइ।।
यहि तन कर फल विषय न भाई। स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई।।
नर तन पाइ विषय मन देहीं। पलटि सुधा ते सठ विषलेहीं।।
तजि मम चरन विषय मन राता। तिन्ह कर काल रुप मैं ताता।।

(रामचरित मानस)

आदि योगी भगवान शिव ने कहा कि बड़े भाग्य से मिलने वाले देव दुर्लभ मानव तन से, विषयों का सेवन करने से मनुष्य इस भाग्य को दुर्भाग्य में बदल देता है। दुर्भाग्य एवं सुख का कोई मेल नहीं है इसलिए मनुष्य के जीवन में किसी न किसी रुप में दुख विद्यमान रहता है।

सुनहु उमा ते लोग अभागी।
हरि तज होहि विषय अनुरागी।।

(रामचरित मानस)

वह भजन, साधना, पूजा, सेवा, अर्चना व्यर्थ है। जो
परमात्मा की अनुकूलता एवं संत-सद्गुरू की सेवा से रहित है।

योगेश्वर श्रीकृष्ण आठवें जन्म में ईश्वर रुप को प्राप्त होने के बाद अपने प्रिय भक्त अर्जुन के माध्यम से सम्पूर्ण मानव जाति को परम कल्याण (अमरत्व) का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि अर्जुन रुप, रस, शब्द, स्पर्श, गन्ध इत्यादि भोग मात्र दुःख योनियों का निर्माण करते हैं। जब तक मन इन्द्रियों के माध्यम से विषयों में फँसा रहता है तब तक जीवात्मा के लिए दुख एवं बन्धनकारी योनियों का निर्माण करता है। इससे बचने के लिए संसार में एक ही उपाय है **''यज्ञ''**। श्वांस–प्रश्वांस में उठने वाले संकल्पों का निरोध करके उसमें ईश्वर का सतत् नाम प्रवाहित हो जाय। संकल्प एवं विकल्पों की इस पूर्ण निरोध अवस्था में यज्ञ के परिणाम अमृततत्व अर्थात् परमात्मा के दर्शन–स्पर्श एवं विलय के साथ वह योगी मेरी तरह सम्पूर्ण कर्म बन्धनों से छूट जाता है, लेकिन बहुत से साधक इस यज्ञ के बदले में भोग माँग लेते हैं। अर्जुन वह पापी है, वह केवल पाप का संग्रह करते हैं, केवल पाप को ही खाते हैं। योगेश्वर श्रीकृष्ण ने कहा कि भोगों की कामना वाले पापी हैं। ऐसे लोग केवल इन्द्रियों के भोगों के लिए ही श्रम करने वाले हैं। इसलिए अर्जुन तुम महापुरुष को अपना आदर्श मानकर लोक संग्रह को देखते हुए आत्मा के कल्याण के लिए कर्म अर्थात् श्वांस–प्रश्वांस का यज्ञ करो।

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः।।

गीता अ. 5/22

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।।

अ 3/13

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्म फले स्पृहा।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते।।

अ. 4/14

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोक संग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि।।
यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।

भेद-भाव, निन्दा-स्तुति में फँसाने वाले कर्म सर्वथा त्याज्य हैं, और रहेंगे।

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।। अ. 3/20

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि।।

अ. 3/22

योगेश्वर श्रीकृष्ण ने कहा कि श्रेष्ठ लोग जो–जो आचरण करते हैं वह एक प्रमाण हो जाता है। पीछे वाले उसे प्रमाण मानकर अनुकरण करते हैं। इसलिए जनकादि ऋषियों की तरह संसार में श्रेष्ठ प्रमाण की भावना से तुम कर्म अर्थात् श्वांस–प्रश्वांस का यजन करके परम कल्याण को प्राप्त हो जाओ। अर्जुन मेरे लिए भी तीनों लोकों में कोई भी कर्तव्य कर्म शेष नहीं है अर्थात् मैं भी इस यज्ञ कर्म के द्वारा परम कल्याण को प्राप्त हो चुका हूँ, लेकिन लोक संग्रह की भावना से पीछे वालों के हित की इच्छा से कर्म में बर्तता हूँ। अर्जुन जो गीतोक्त साधना चक्र के अनुसार आचरण न करके मनमानी आचरण करता है वह पापी है। व्यर्थ ही जीने वाला है अर्थात् उसके जीते रहने से कोई लाभ नहीं है।

एवं प्रवर्तित चक्रं नानु वर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति।।

अ.3/16

योगेश्वर श्रीकृष्ण का मात्र इतना कहना है कि इन्द्रियों के भोग केवल दुख रुप योनियों का निर्माण करते हैं। इन भोगों में अनुरक्त रहने वाले व्यर्थ ही जीते हैं। योग के परिणाम में इनका अंत होने से जीव का परम कल्याण होता है। योगी सम्पूर्ण पापों से छूटकर अपने स्वरूप को प्राप्त होता है। चार हजार वर्ष पूर्व पारसी धर्म के प्रवर्तक जरथुस्त्र ने ईश्वर प्राप्ति के बाद समस्त मानव जाति को संदेश देते हुए कहा कि अहूर मज्दा (असुर मर्दन) ही वह अग्नि है जिसमें मनुष्य के सभी शुभाशुभ कर्म जलकर सम्पूर्ण दुखों से छुटकारा के साथ वास्तविक स्वरूप की प्राप्ति होती है। अहुर मज्दा को प्राप्त कर मनुष्य जन्म–मरण की श्रृंखला को तोड़ देता है।

भगवान महावीर राज परिवार में जन्म लेकर वहाँ के अपार इन्द्रिय जन्य भोगों को देखा उनका अनुभव किया तथा अपने आचरण से अन्य

महापुरुषों की भांति समस्त मानव जाति को भोगों से छूटकर आत्म कल्याण का, ईश्वर प्राप्ति का संदेश दिया। उन्होंने योग साधना के परिणाम स्वरूप केवली ज्ञान प्राप्त किया जिसे महावीर से पूर्व हुए महर्षि पातंजलि ने कैवल्य पद कहा है। योग साधन में अनेंक परिषदों को पार किया। इस कठिन योग साधना के मध्य एक जगह महीनों खड़े रहकर मन को एकाग्र करने के अभ्यास के दौरान शरीर में लताएं चढ़ जाने से चिड़ियों ने घोंसला बना लिया था। राज परिवार में जन्में अत्यंत सम्मान की जिंदगी जीने वाले योग साधना के दौरान अनेंक लोगों से अपमानित किये गये। जंगली लोगों द्वारा अनेंक प्रकार से प्रताड़ित होने के बाद भी मन की निर्मलता में कोई अन्तर नहीं आया। जंगली लोग कुत्ते छोड़ देते थे, थूकते थे, पेशाब कर देते थे यह सब उनके राज्य में भी होता था। वह कभी राजा थे, साधनाकाल में उनके छोटे भाई राजा थे। एक इशारे पर वह गाँव उजड़ जाता, लेकिन समस्त व्यवधानों को शान्तिपूर्वक विवेक के साथ सहन करके कैवल्य को प्राप्त किया। जब राज परिवार से निकले थे, तो एक वस्त्र पहने थे, एक ओढ़े थे। पाँच–छः वर्ष की कड़ी साधना के बीच वस्त्र फटकर नीचे गिर गये। भजन की मस्ती में कुछ भान ही नहीं था। आज उनके अनुयायी कई भागों में बँटते जा रहे हैं। उनके साथ तो स्वाभाविक घटना घटी। साधु स्वभाव से किसी से कुछ माँग नहीं सकते थे। इसलिए वस्त्रहीन रहकर ही घोर जंगल में अपनी साधना पूर्ण की। आज उनके अनुयायी आरंभ से ही वस्त्र का त्याग कर देते हैं। यदि वस्त्र का त्याग करने से कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति तथा समस्त दुखों से छुटकारा सम्भव है तो समस्त वस्त्रहीन शरीरधारी पशु–पक्षियों एवं आदिवासी मनुष्यों को जिनके शरीर में एक भी वस्त्र नहीं होता चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष सबको कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति होनी चाहिये, लेकिन ऐसा कदापि सम्भव नहीं है। वितृष्णाओं से सर्वथा छूटने के लिए तो पूर्ण विवेक के माध्यम से भगवान महावीर की भाँति सभी परिषहों को सहर्ष सहन करते हुए कैवल्य को प्राप्त किया जा सकता है। यहीं पर सम्पूर्ण संकीर्णताओं का, बाह्य मान्यताओं का, परम्पराओं का तथा जन्म–मृत्यु एवं सुख–दुःख का सर्वथा अभाव होता है।

भगवान महावीर से हजारों वर्ष पूर्व भगवान ऋषभदेव इसी कठोर

योग साधना का आश्रय लेकर अपने आपको एक श्रेष्ठतम आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित कर सके।

भगवान बुद्ध भी एक समृद्धशाली साम्राज्य के उत्तराधिकारी थे। उन्होंने संसार के आय और व्यय पर तथा उसकी नश्वरता पर भली प्रकार विचार करके तथा झोपड़ी से लेकर महलों तक सब जगह समान रुप से दुख एवं असफलता का जीवन जीते हुए बेबस लोगों की दयनीय दशा पर विचार करके उससे सर्वथा छुटकारा पाने के लिए, उसका उपाय खोजने के लिए महलों का सुख छोड़कर योग साधन के माध्यम से अपने जीवन में उसका क्रियात्मक अनुभव प्राप्त करते हुए योग के परिणाम में बोधिसत्व को प्राप्त हुए तथा संसार के लोगों को सरलतम ढंग से उस ज्ञान से अवगत कराया। भगवान बुद्ध ग्रह अभिनिष्क्रमण के समय एक बहेलिये के गैरिक वस्त्र लेकर अपने राजसी वस्त्र उसे दे दिये थे। पाँच–छः वर्ष में उन वस्त्रों के फट जाने पर एक महिला के शव से लाल वस्त्र उतारकर अपना शरीर ढक लिया था। उन्होंने अपने साधना के माध्यम से यह बताया कि भेषभूषा का मन का निरोध करने में कोई विशेष महत्व या योगदान नहीं रहता है। उन्होंने प्रथम आचार्य आलार कालाम तथा द्वितीय आचार्य उद्रक रामपुत्र से मन की निरोध प्रक्रिया से लेकर अपदार्थता भाव से गुजरते हुए निर्विचार समाधि तक की साधना का क्रम समझकर उसे आत्मसात किया तद्नन्तर अनवरत ध्यान समाधि में लगे रहकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर घोषणा की कि मैंने आज रात्रि के अन्तिम प्रहर में उस अविनाशी तत्व को उसी सत्य को प्राप्त किया है जिसे पूर्व ऋषियों ने प्राप्त किया है। साधना की पूर्ण सफलता के बाद अपने क्रियात्मक अनुभव से सबको लाभान्वित किया। आज भगवान बुद्ध के अनुयायी एक ही प्रकार की वेषभूषा को योग साधना की उपलब्धि मानते हैं। जबकि भगवान बुद्ध की साधना का आरंभ एक बहेलिये के वस्त्र से हुआ था। भगवान बुद्ध ने सबसे अधिक मन के निरोध पर बल दिया। उन्होंने अपने पिताश्री से स्पष्ट कहकर राज्य सिंहासन में बैठने से इंकार कर दिया था।

उन्होंने कहा पिता जी मैं हवा मिली हुई आग से नहीं डरता हूँ, मैं दुश्मन की नंगी तलवार से नहीं डरता जितना मैं अपने चंचल चित्त से डरता हूँ। आज मन का निरोध करने में सतत् प्रयत्नशील कोई लाखों भिक्षुओं में एक ही मिल सकता है।

भगवान बुद्ध ने सतत् ध्यान समाधि द्वारा समस्त दुखों से मुक्त होने का उपाय बताया। इसलिए उन्होंने कहा कि तथागत की शरीर पूजा में समय नष्ट मत करना अहर्निश ध्यान समाधि का अभ्यास करना, ध्यान समाधि के अभ्यास पर सभी महापुरुषों ने बल दिया है। बिना इस अवस्था के दुखों से छुटकारा सम्भव नहीं है। बुद्ध अलग धर्म कैसे बन सकता है? जब सभी महापुरुष एक ही प्रक्रिया से गुजरे हैं।

भगवान बुद्ध के ही परम्परा में ईसा मसीह हुए। योग साधना की पराकाष्ठा में उन्हें शैतान पहाड़ पर ले जाकर चालीस दिन तक भटकाता रहा। ईसा से कहा कि एक बार मुझे प्रणाम कर लो तो यह जो सोने चाँदी, हीरे, जवाहरात की खाने तथा यह अपार वैभव का भण्डार देख रहे हो, इस सबका तुम्हें मालिक बना दूँगा। ईसा ने जवाब दिया कि पवित्र शास्त्र में लिखा है कि ''केवल ईश्वर को प्रणाम कर''। इसके बाद शैतान ने हार मानकर छोड़ दिया। ईश्वरीय ज्ञान को प्राप्त कर ईसा मसीह ने लोगों के बीच उस पवित्र संदेश को दिया जिसका उल्लेख यत्र–तत्र बाइबिल में मिलता है।

एक बार वह एक बहुत बड़े जन समुदाय को धर्म का उपदेश दे रहे थे। उसी समय उनके माता–पिता तथा भाई–बहन आ गये। उनके शिष्य उनसे मिलकर बहुत खुश हुए तथा ईसा मसीह को उनके आगमन की सूचना दी ताकि उन्हें भी प्रसन्नता हो कि लम्बे समय के बाद उनसे मिलना हो रहा है। ईसा ने कहा मैं तुमसे सच कहता हूँ, मेरा भाई, मेरा पिता, बहन तथा माँ वही है जो ईश्वरीय आदेश पर चलता है। इस सत्य को संसार के प्रत्येक महापुरुषों ने स्वीकार किया है कि योगपथ पर चलने वाले प्रत्येक साधक से ईश्वर बात करता है जब सद्गुरु मिलते हैं। उनसे प्रदत्त योग साधना में सतत् लगने वाला इस प्रक्रिया से गुजरने लगता है। ईसा मसीह ने यही कहा कि जो ईश्वर के आदेश पर चलता है। जब महापुरुष मिलेगें उनसे साधना मिलेगी। उसका

हम सतत् अभ्यास करेगें तब ईश्वर निर्देश देगा। उस निर्देशन पर चलने वाला ईसा मसीह का भाई है। यही बात तो भगवान श्रीराम ने अपने भक्तों से कही–

सोई सेवक प्रियतम मम सोई। मम अनुशासन मानै जोई।।

(रामचरित मानस)

ईसामसीह ने कहा कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखें। पड़ोसी कोई भी हो सकता है। उन्होंने एक बार अपने शिष्यों के पैर धोकर कहा कि यदि महान बनना है तो इतना ही विनम्र बनो। ईसा से ढाई हजार वर्ष पहले योगेश्वर श्रीकृष्ण ने सबकी जूठी पत्तले उठाकर अपनी महानता का परिचय देकर अपने अनुयायियों को सेवा का पाठ पढ़ाया। अपने को सबसे छोटा समझकर साधना में सतत् लगे रहो। उन्होंने अपने शिष्यों को एक कुर्ता पहनने के तथा एक रखने का आदेश दिया इससे अधिक नहीं। आज उनके अनुयायी कितनी बातों पर अमल कर रहे हैं। आज कोई भी पोप या पादरी जो ईसामसीह का प्रचार कर रहे है। किसी का पैर नहीं धोया, ईश्वरीय आदेश पर नहीं चले। लोगों की धारणा है कि जो शास्त्र में लिखा है वही ईश्वरीय आदेश है, लेकिन प्रत्येक पथिक को यह आदेश प्राप्त होता है। यदि केवल शास्त्र में लिखा ही ईश्वर का आदेश है तो वर्तमान के रहन–सहन एवं पहनावे का तथा व्यवस्था का कोई उल्लेख किसी धर्मशास्त्र में नहीं है। आज कोई गधे पर नहीं चलता जबकि बाइबिल में गधों का उल्लेख है। हवाई जहाज, मोटर कार का उल्लेख भारतीय शास्त्रों में छोड़कर किसी शास्त्र में नहीं है ऐसी कोई बात नहीं है। प्रत्येक समय की प्रत्येक देश की परिस्थितियों के अनुसार जीवन यापन करते हुए महापुरुषों ने अपने मन का निरोध करके ईश्वर को प्राप्त किया। यह सिद्धान्त सदैव से था और सदैव रहेगा। आवश्यकतानुसार सामाजिक नियम एवं रुप रेखा बदलती रहती है। आज ईसाई चालीस दिन

तक विश्राम सव्वाथ मना लेते हैं। इस उद्देश्य से कि शायद ईश्वर मिल जाय। आज जिस वैभव एवं सम्पदा के लिए एक दूसरे को षडयंत्र का शिकार बनाते रहते हैं। उस वैभव का प्रलोभन ईसामसीह को चालीस दिन तक शैतान देता रहा और अंत में ईसामसीह के समक्ष नतमस्तक हो गया। आज एक दूसरे की सत्ता तथा धन हड़पने के लिए ईसामसीह के अनुयायी प्रयत्नशील दिखाई देते हैं। उनके पद चिन्हों पर चलने वाला कोई नहीं दिखाई देता रहा है।

भगवान बुद्ध के जीवन से प्रभावित होकर ईसामसीह ने भी उन्हीं की तरह चालीस दिन तक निराहार रहकर कठोर साधना की। वाल्मिकि रामायण के अनुसार एक महीने तक सीता को रावण अपना वैभव दिखाता रहा अंत में हार गया। इसी प्रकार का उल्लेख प्रत्येक महापुरुष के जीवन में मिलता है क्योंकि योगपथ एक ही है, उसमें मिलने वाली अनुभूति तथा उपलब्धि एक है। इसलिए सभी महापुरुषों में समानता दिखाई देती है।

मोहम्मद साहब के जीवन की शुरुआत सत्य बोलने से हुई है। उनकी माँ ने उनके आस्तीन में सोने की बीस अशर्फी सिल दिया था। एक काफिले के साथ गन्तव्य की ओर बढ़ रहे थे। उस रेगिस्तान में दस्युओं ने आकर लूटपाट आरंभ कर दिया। लूटते हुए वह बारह वर्ष के बालक के पास पहुँचकर तलाशी लेने पर कुछ भी नहीं पाया। पूछने पर उसने बताया कि मेरे पास बीस अशर्फी हैं और सरदार के पास उसने अपना अस्तीन फाड दिया। सबको बड़ा आश्चर्य हुआ उन्होंने कहा यदि तुम चाहते तो यह अशर्फी बचा सकते थे। हमने तो तलाशी में कुछ भी नहीं पाया। बालक ने कहा मेरी माँ ने कहा था कि झूठ नहीं बोलना चाहिये।

इस घटना का सभी दस्युओं पर बड़ा प्रभाव पड़ा। उन्होंने अपने हथियार फेंककर सदैव के लिए बुरे कर्म छोड़ दिये। यही आधार मोहम्मद साहब का जीवन के अंतिम क्षणों तक रहा। जिनके संपर्क में आने से दस्युओं ने खून–खराबा छोड़कर सत्य मार्ग पकड़ा, आज उन्हीं के नाम पर खून खराबा कहाँ तक उचित है।

मोहम्मद साहब ने भोगों में फँसे लोगों को खुदा की तरफ मोड़ा, बदी की राह से निकाल कर नेकी की राह पर चलाया। उन्होंने कहा– नेकी के

काम करो ताकि कयामत के समय तुम्हें खुदा के सामने सिर नीचा करके न खड़ा होना पड़े। तुम नेकी के काम करो ताकि तुम्हें दोजख की आग में न डाला जाय। जितने भी खुदा के रसूल हुए हैं उन सब पर विश्वास करों क्योंकि गिनती में हजारों होते हुए भी वह एक है। किसी का दिल मत दुखाओं क्योंकि वह खुदा की इबादतगाह है। अपने दिल को पाक साफ बनाओ ताकि खुदा की रहमत के साथ उसका दीदार कर सको। नेकी का मार्ग ही जन्नत का मार्ग है। खुदा जो सांतवे आसमान में है तुम्हारे हर अच्छे और बुरे कर्म को सावधानीपूर्वक हर समय देखता है। अपनी प्रिय वस्तु को तथा जीवन को खुदा की राह पर कुर्बान करो ताकि खुदा की रहमत मिल सके उसका दीदार हो सके। मोहम्मद साहब के सच्चे अनुयायी इब्राहिम ने अपने बेटे जिब्राइल को जो उन्हें सबसे प्रिय था खुदा के हुक्म से उसे खुदा की राह पर कुर्बान किया। खुदा ने एक दिन अपने दिलीरहनुमा इब्राहिम को ख्वाब में हुक्म दिया कि अपनी प्रिय वस्तु को जब तक मेरी राह में कुर्बान नहीं करोगें तुम्हें नवूवत (मुक्ति) नहीं मिलेगी। उसने विचार करके पाया कि सबसे मेरा मन हट गया है। केवल इकलौते पुत्र पर मन है जो मुझे सबसे प्रिय है। उसने ख्वाब में ही आँखों में पट्टी बाँधकर अपने बेटे को लिटाकर ज्यों ही खंजर चलाया देवदूतों ने बेटे को हटाकर एक भेड़ रख दिया। तब से उनके अनुयायी भेड़ों, बकरियों, ऊंटों, गधों, गाय, बैलों की कुर्बानी देने लगे। जबकि खुदा का सीधा हुक्म कि अपनी प्रिय वस्तु को मेरी राह पर कुर्बान करो जब तक कोई ऐसा नहीं करता खुदा की रहमत एवं दीदार से दो चार रहता है।

मोहम्मद साहब के बाद उनके अनुयायियों ने ईद एवं रोजा को नेकी का मार्ग समझकर उस पर चलने का प्रयास किया, लेकिन महापुरुषों के इन महान शब्दों का आशय न समझने के कारण मनुष्य को अपने कर्मों का उचित फल नहीं प्राप्त हो सकता है।

ईद का अर्थ होता है ''पलट कर घर लौटना'' हमारा जन्म संसार में बार–बार कर्मों के अनुसार होता रहता है। हम करोड़ों घरों में जन्म ले चुके हैं और तब तक घर बदलते रहेगें जब तक अपना घर जिस घर से रुह आई है, जिस रुहानी दरिया का यह कतरा है, एक हिस्सा है, उसी रुहानी सत्ता में यह कतरा संसार के भोगों की चकाचौंध से उलटकर उससे अपने मन को फेरकर

उसमें समा जाय तो ईंद का फल मिल गया। यही अर्थ रोजा का है। रोजा को अरबी में सियाम कहते हैं। जिसका अर्थ है रुक जाना। जब तक मंजिल नहीं मिली तब तक चलना जारी रहेगा। एक शरीर से दूसरे शरीर में आना जाना जारी रहेगा। सबकी मंजिल परमात्मा है। उसे पाने के बाद यात्रा पूर्ण होती है। इसके साथ रोजा भी पूरा हो जाता है। संत कबीर ने इसी को साफ शब्दों में कहा कि–

सेवक को सद्गुरु मिला कछु रही न तबाही।
कह कबीर निज घर चलो जँह काल न जाही।।

कुछ विद्वान लोग कहते हैं कि एक ही बार जन्म होता है। यदि एक बार जन्म होता है तो कुछ अमीर, कुछ गरीब, कुछ सुन्दर, कुछ कुरुप क्यों? सबकी एक जैसी व्यवस्था होनी चाहिये। नेकी और बदी के फल को भोगने के लिए जन्म तो लेना पड़ता है। इन दोनों के परिणाम से जो ऊपर उठ गया उसकी ईद पूरी हो गई उसका रोजा पूरा हो गया क्योंकि उसे अपना असली मुकाम मिल गया है।

जब कोई भी बन्दा कामिले मुर्शिद के माध्यम से दोजख से बचने के लिए खुदा की राह पर चलता है तो वह अपने मन में बसे हुए बुरे विचारों से जेहाद (संघर्ष) करता है। यह बुरे विचार उसे खुदा के राह पर नहीं चलने देते। वह नेक बन्दा मन में बसे हुए बुरे विचारों से जेहाद करता हुआ इनके अंत के साथ नुवूवत को प्राप्त करता है। मोहम्मद साहब का मुख्य संदेश यही था कि बड़ा धोखा खाया जिन्होंने अल्लाह को नहीं जाना। अल्लाह सृष्टि में एक है। मोहम्मद साहब स्वयं खुदा के नेक बन्दों में से एक थे। वह खुदा को इतने प्रिय थे कि खुदा ने उन्हें अपना रसूल मुक्करर्र किया और बुरे तथा अच्छे विचार वाले सभी मनुष्यों को अपनी तरफ मोड़ने का हुक्म दिया। उन्होंने लाखों लोगों को बुराई के मार्ग से तथा हिंसा के मार्ग से निकालकर अच्छाई और दया के मार्ग पर चलाया। जिन्होंने लाखों लोगों के हथियार फेंकवा दिये आज उन्हीं के नाम पर हथियार

उठाये जा रहे हैं। बुद्धिजीवी लोग कभी विचार भी नहीं करते कि यदि नेकी या अच्छाई एवं धर्म के मार्ग पर चलकर मनुष्य क्रूर बनेगा तो किस मार्ग पर चलकर उसे दयावान बनाया जा सकता है?

सभी धार्मिक लोग अपनी–अपनी श्रेष्ठता की प्रमाणिकता देते रहते हैं। क्या धर्म में झगड़े की सम्भावना होती है? क्या धार्मिक व्यक्ति क्रूर हो सकता है? यदि धर्म मनुष्य को क्रूर बनाता है तो दयालु कौन बनायेगा? इस पर सभी धार्मिक प्रतिनिधियों एवं विचारकों को मनन करना चाहिये।

आदि शंकराचार्य ने बारह वर्ष की अवस्था में गृह त्याग कर सन्यास लिया तथा सतत् योगाभ्यास के द्वारा अठारह वर्ष में ईश्वर का साक्षात्कार करके सबको इस लाभ से लाभान्वित कराने का प्रयास किया। उनका मुख्य उपदेश था कि यदि संसार में कुछ सत्य है तो वह है ईश्वर। दुख और मृत्यु से बचने का एक ही उपाय है, परमात्मा के सतत् चिन्तन से आत्मबोध प्राप्त करना। यदि ऐसा नहीं करते तो पशुओं से अधिक महत्व नहीं है। चाहे वह समस्त शास्त्रों का ज्ञाता ही क्यों न हो।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यम् हरिर्र नामैः केवलम्।
प्राप्तेसन्नेहिते मरणे नहि नहि रक्षन्ति डुंकग्स करणे।
पशुं पशो को न करोति धर्मः प्राधित शास्त्रोऽपि न च आत्मबोधः।।

भगवान बुद्ध के डेढ़ हजार वर्ष बाद आदि शंकराचार्य हुए तब तक भगवान बुद्ध की मूल शिक्षाएं तिरोहित हो गयी थी तथा उनकी जगह काल्पनिक सिद्धान्तों ने जगह ले ली थी। इन अनर्थकारी सिद्धान्तों पर विचार करके कारुणिक हृदय शंकराचार्य ने भगवान बुद्ध के मूल सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इस प्रक्रिया को न समझने के कारण पीछे वालों ने कहना शुरु कर दिया कि शंकराचार्य ने बुद्ध मत का खण्डन किया है। जबकि ऐसा कदापि नहीं है। भगवान बुद्ध के नाम पर उत्पन्न काल्पनिक सिद्धान्तों का बहिष्कार किया था न कि भगवान बुद्ध की मूल शिक्षा का। आज तक कभी किसी महापुरुष ने किसी महापुरुष के सिद्धान्त को नहीं काटा। प्रत्येक महापुरुष के बाद उनके नाम पर निर्मित कुरीतियों को प्रत्येक महापुरुष ने दूर किया है। संसार के सभी महापुरुषों का एक ही संदेश तथा उद्देश्य था है और

रहेगा कि संसार के दुखों से सर्वथा छुटकारा पाना जो ईश्वर दर्शन के साथ ही सम्भव है। ध्यान एवं समाधिकाल में ईश्वर का दर्शन सम्भव है। मन की पूर्ण निरोधावस्था ही ध्यान एवं समाधि कहलाती है। क्या इस सिद्धान्त को किसी महापुरुष ने काटा है? यदि इस सिद्धान्त को कोई काटता है तो निःसंदेह वह मानव जाति का हितैषी कदापि नहीं हो सकता है।

आदि शंकराचार्य ने जिस मुख्य सिद्धान्त का प्रतिपादन किया तथा इसी एक सिद्धान्त पर भारत के अनेक विद्वान कर्मकाण्डियों को परास्त कर अपना सिद्धान्त मानने के लिए विवश किया, लेकिन आज उन्हीं आदि शंकराचार्य के नाम पर अनेकों प्रकार के काल्पनिक सिद्धान्तों का प्रचार किया जाता है। जिन्होंने ऐकेश्वरवाद पर आजीवन बल दिया। उन्होंने परमात्मा के अतिरिक्त किसी की सत्ता को स्वीकार नहीं किया। यही संसार के प्रत्येक महापुरुष का सिद्धान्त है। आदि शंकराचार्य ने कहा **''अयं तु परमो धर्मः यद्योगेनात्म दर्शनः''** योग के माध्यम से ईश्वर का दर्शन ही परम धर्म है और इस धर्म का जो पालन नहीं करता वह समस्त शास्त्रों का ज्ञाता होने के बाद भी पशुओं से बढ़कर भी पशु है क्योंकि उसके पास पशुओं की भांति भोगों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है जिनका परिणाम दुख है।

संत कबीर संसार में हुए। सभी महापुरुष की तरह सत्य की अनुभूति करने वाले एक महापुरुष थे। उनके चिन्तन का नाम राम था। यही शब्द मंत्र के रुप में अपने गुरुदेव स्वामी रामानंद जी से प्राप्त किया था। इसी नाम के सतत् जप से समाधिकाल में ईश्वर भाव को प्राप्त होने के बाद आदि शंकराचार्य की तरह कह उठे।

''धरती हती न पग धरु, नीर हता न नहाऊ''।
माता ने नहिं जन्मीया क्षीर कहां ते खांऊ।

वह अपने उपदेशों में सदैव कहते थे कि

राम न रमसि कबन दण्ड लागा। मरि जइवे का करसि अभागा।

स्वयं अपनी स्थिति के बारे में बताते हुए कहते–

''रा और म के बीच में कबीरा रहा लुकाय''
जीव सीव सब प्रगटे वे ठाकुर वे दास।

वह व्यक्ति, संगठन एवं राष्ट्र धन्य है जिसने संघर्ष एवं भेदभाव रहित संस्कृति को जन्म दिया, ऐसी संस्कृति से मानव जाति का सम्पूर्ण विकास निश्चय ही होता है।

कबीर और जानै नहीं एक राम नाम की आस।।

राम नाम दुर्लभ अति औरहुं ते नहि काम।

आदि अंत अरु युग–युगन रामहि ते संग्राम।।

कबीर साहब भी ईश्वरीय निर्देशन में चलकर सम्पूर्ण दुखों से छूटकर स्वरुप को प्राप्त हुए। उन्होंने कहा कि–

कबीर कुत्ता राम का मोतिया मेरा नांव।

गले राम की जेवरी जित खैचे तित जांव।।

इतना सब स्पष्ट होने के बाद आज उनके अनुयायी मात्र सतनाम–सतनाम कहकर अपने अनुयायी होने का परिचय देते हैं। पुत्र वही है जो पिता की प्रसन्नता को सहज ही प्राप्त कर लेता है। अन्यथा पिता से प्रयोजन ही क्या है?

उमा कहहुं मै अनुभव अपना। सत हरि भजन जगत सब सपना। ।

सत एक मात्र परमात्मा और उसका नाम है। उस नाम को श्वांस में जपने की विधि सद्गुरु देते हैं। जिससे साधक समस्त दुखों से छूटकर ईश्वर को प्राप्त हो सके। संत कबीर ने अन्य महापुरुषों की भाँति एक परमात्मा के प्रति अटूट आस्था पर बल दिया उन्होंने कहा–

राम पियारा छोड़कर करै और का जाप।

वेश्या केरो पूत ज्यों कहे कौन को बाप।।

एक परमात्मा राम का नाम छोड़कर जो दूसरे प्रकार से किसी और का जाप करता है। वह वेश्या के पुत्र जैसा है जिसका कोई बाप नहीं होता है। इससे और अधिक खरी–खोटी बात क्या हो सकती है? फिर भी उनके अनुयायी पता नहीं क्या–क्या कहते हैं। यही बात प्रत्येक महापुरुष के नाम से संगठित समाज की है। यही भ्रम मतभेद का कारण है।

कबीर साहब समस्त मानव जाति को शाश्वत सुख एवं शान्ति का संदेश देते हुए कहते हैं कि–

भजन भगति हरिनाम दूजा दुख अपार।

मनसा बाचा कर्मणा कबीर सुमिरन सार।।

भजन एवं भक्ति का आरंभ हरि के नाम से है। संसार में केवल सार

है। मन, कर्म एवं वचन से श्रृद्धापूर्वक प्रभु के नाम का सुमिरन। इसके अतिरिक्त मनुष्य जो भी करता है अपार दुखों की रचना करता है। संत कबीर साहब की तरह संत गोस्वामी जी ने भी कहा कि–

तजि विविध कर्म, अधर्म बहुमत शोकप्रद सब त्यागहू।
विश्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू।।

संसार में कल्याण के नाम पर शुभ कर्मों के नाम पर जो विविध प्रकार के कर्म फैले हैं वह सब अधर्म है केवल दुख का निर्माण करने वाले हैं। इसलिए वह सभी कर्म त्याज्य हैं। आज विश्वासपूर्वक एक राम के चरणों में अनुराग ही सब सुखों का मूल है। इसके अतिरिक्त केवल दुख है।

राम नाम जीह्वा जब लौ तू न जपिहै।
तब लौ तु कहूँ जाय तिहूं ताप तपिहे।।

हे जिभ्या! जब तक श्रृद्धापूर्वक तुम एक राम का सुमिरन नहीं करोगी तब तक सृष्टि में कहीं भी जन्म ले लो कितनी भी अच्छी व्यवस्था बना लो लेकिन तीनों तापों में सदैव जलते रहोगे। तीनों तापों से छूटने की महाऔषधी एक राम का नाम है। नाम जपते–जपते ह्रदय में माया का प्रभाव हटकर जहाँ राम का प्रभाव आ गया तो–

दैहिक–दैविक भौतिक तापा। राम राज काहू नहिं ब्यापा।।

इसलिए समस्त दुखों से छूटने के लिए पूर्ण निष्ठा एवं लग्न से एक परमात्मा के नाम का सुमिरन करना चाहिये। यही जीवन का सार है।

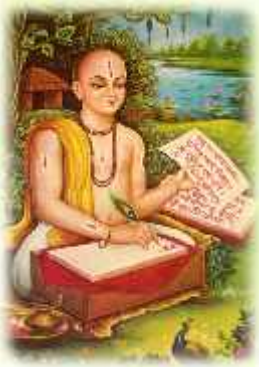

गोस्वामी जी ने कहा जो एक परमात्मा को छोड़कर किसी और का भजन करता है वह बिना सींग–पूंछ का पशु है। संत कबीर ने कहा कि वह वैश्या का पुत्र है। मोहम्मद साहब ने कहा कि वह काफिर है। योगेश्वर श्रीकृष्ण ने कहा कि वह असुर है। इतने स्पष्ट निर्देशन के बाद भी पता नहीं लोग किसका–किसका सुमिरन करते हैं?

शिव विरंचि विष्णु भगवाना।
उपजहिं जासु अंश ते नाना।।

अपनी आत्मा को ईश्वरीय गुण धर्मों एवं महिमा से ओत-प्रोत देखना ही धर्म है।

ऐसेहु प्रभु सेवक वश अहई।
वेद पुरान संत सब कहई।।
अस प्रभु छांडि भजहि जे आना।
सो नर पशु बिनु पूछ विसाना।।

जिस परमात्मा से हजारों ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर पैदा होते और विलीन होते रहते है ऐसा परमात्मा सेवक के वश में हो जाता है। पुत्र, पत्नी, भाई, माता–पिता, संबंधी एवं मित्र अपने वश में नहीं है, लेकिन श्रृद्धापूर्वक सेवा एवं नाम रुप से सृष्टि की सर्वोपरि सत्ता सेवक के वश में हो जाती है। योगेश्वर श्रीकृष्ण ने कहा–

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनः।
दंम्भाहंकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः।। अ. (17/15)
कर्शयन्तः शरीरस्थंभूतग्राममचेतसः।
मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्धयासुरनिश्चयान।। अ. (17/6)

गुरुनानक जी का संदेश किसी भी महापुरुष से भिन्न नहीं है। उन्होंने संसार के समस्त महापुरुषों को एक ही मार्ग का अनुयायी पाया। तभी उनकी वाणी गुरु ग्रन्थ साहित्य में अनेंक महापुरुषों की वाणियों का संकलन है।

गुरु नानक जी दुख से छूटने का उपाय बताते हुए कहते हैं कि–

''सगल स्रष्टि राजा दुखिया''
''हरि का नाम जपत हो सुखिया''

उन्होंने एक परमात्मा के सुमिरन पर बल दिया–

नानकु एकै सुमिरिये, जो जल थल रहयो समाय।
दूजा काहे सुमिरिये, जो जन्मे अरु मरि जाय।।
वेद पुरान स्मृति सुधाकर।
कीन्हेउ राम नाम एक आखर।।
सिमरहु सिमिर सिमिर सुख पावहु।।
कलि कलेस उर माहि मिटावहु।।
सिमिरहु जासु विसंभर एकै।

नाम जपत अनगिनत अनेकै।।

संतों के पास सभी तरह के लोग कल्याणार्थ पहुँचते ही रहते हैं। एक बार कुछ नशा करने वाले पहुँच गये। उन्होंने गुरु नानक जी से दम लगाने का आग्रह किया। तब गुरु नानक जी ने कहा कि–

भांग, भसूरी, सुरापान उतर जाय परभात।

नाम खुमारी नानका चढी रहे दिन रात।।

नाम की खुमारी दिन रात चढ़ी रहे तभी समस्त दुखों से छुटकारा सम्भव है। दुःख के कारण अन्तःकरण के विकार हैं। इसलिए अपनी वाणी में सिक्ख की पहचान बताते हुए कहते हैं कि–

सिक्ख होके करै करोध। कन्या मूल न देवे सोध।।

यदि सिक्ख होकर क्रोध करता हो तो उसे भूलकर भी अपनी कन्या नहीं देना चाहिये अर्थात् सिक्ख वह है जो क्रोधादि विकारों से दूर है। इन समस्त विकारों से छूटने का एक ही उपाय है। सद्गुरु प्रदत्त एक ऊँ का जाप तथा श्रृद्धा से उनकी सेवा से प्राप्त कृपा।

जिसने राम नाम के सतत् सुमिरन से अपने समस्त इच्छाओं एवं विकारों पर विजय प्राप्त कर लिया है। वही सच्चा सद्गुरु है। उसमें और ईश्वर में कोई अन्तर नहीं है। "**सो मूरत भगवान**''।

राम नाम उर मे गयो, सो नर मुक्ता जानु।

तेहिं नर हरिं अन्तर नहीं, नानक सांची मानु।।

जो विकारों से छूटने का यत्न नहीं करता वह इसी संसार की अनन्त नारकीय योनियों में सदैव भटकता हुआ दुख उठाता रहता है। उसके पास कुछ भी सार वस्तु नहीं होती। जिससे उसे सुख–शांति मिल सके। उसके पास तो केवल–

विख खाणा विख पहणनाा, विख के मुखीं गिरास।

इत्थे विखइ विख कमांवणा, मुइया नरकु निवासु।।

संकीर्णता रूपी बीज संसार के लिये बहुत ही घातक है। इसे समूल नष्ट करना चाहिए। जिस दिन यह बीज नष्ट हो जायेगा, नाना प्रकार की समस्याऐं मिट जायेगी।

एक राम नाम के सुमिरन पर गुरु नानक जी ने बल दिया है। इसके बाद भी अनेंक सम्प्रदायों की भाँति अपनी अलग पहचान बनाने की भावना से एक अलग से नाम का अविष्कार कर लिया।

''सत श्री अकाल वाहे गुरु जी का खालसा,
वाहे गुरु जी की फतह। ''वाहे गुरु, सतनाम''

जबकि सभी महापुरुषों ने एक ऊँ एवं राम के जाप पर बल दिया है। इसी नाम के द्वारा मनुष्य दुखों के कारणों से छुटकारा पा सकता है। यदि हम अपने आदर्श की वाणी को नहीं मानते उसे स्वीकार नहीं करते तो उनके दरबार में हमारा क्या स्थान होगा सोचना चाहिये।

महान संत जगजीवन स्वामी का नाम आपने सुना होगा। पूर्वोत्तर भारत में अधिक लोकप्रिय संत थे। ईश्वरीय निर्देशन में चलने वाले अपने समय के महान संतों में गिनती होती है। आपकी योग साधना जब सर्वोच्च शिखर पर पहुँची उसी समय एक अनुभूति परक विलक्षण घटना घटी। यही

घटना आपकी मुक्ति का कारण बनी, लेकिन पीछे वाले अनुयायियों के लिये यह पतन का कारण बनी। आपको समाधि अवस्था में लगातार तीन महीने तक ईश्वरीय आदेश मिलता रहा कि शादी करो तभी मुक्ति होगी। आपने विचार किया कि यह ईश्वर का आदेश नहीं हो सकता है। ईश्वर तो अपने भक्त को नरक से निकालता है, बन्धन से मुक्त करता है। यह तो किसी अन्य का आदेश हो सकता है ईश्वर का नहीं।

इसी अनिर्णित उहापोह में तीन महीने बीत गये। जब भगवान ने कहा यह हमारा आदेश है किसी अन्य का नहीं। यदि शादी नहीं करोगे तो एक जन्म और लेना पड़ेगा। यह बहुत ही प्रबल संस्कार है भजन से नहीं कटेगा। तब जगजीवन स्वामी ने सोचा कि मलमूत्र की खान में पड़े रहने से तो अच्छा है कि ईश्वर का आदेश मान लें। शरीर में कहीं मलमूत्र लग जाता है तो तुरन्त धोना पड़ता है, लेकिन गर्भ में नौ महीने पड़ा रहना पड़ेगा। मैं नाम मात्र की

शादी करके छोड़कर चल दूँगा। आदेश भी पालन हो जायेगा और मैं नारकीय यातनाओं से भी बच जाऊँगा। उन्होंने भली प्रकार सोच–विचार कर भगवान से कहा कि मैं योगाभ्यास से दुबला पतला हो गया हूँ। इस समय मेरी अवस्था पचहत्तर साल की है। कौन अपनी लड़की की शादी मुझ जैसे बुड्ढे तथा दुबले–पतले से करेगा? भगवान ने निर्देश दिया कि अमुक गाँव में एक सरपंच की लड़की तीन दिन बाद मर जायेगी। तुम्हारे कहने से वह जिन्दा हो जायेगी। शादी की शर्त से उसे जिन्दा करके आदेश का पालन करो।

जगजीवन स्वामी ने ऐसा ही किया। वह निर्देशित गाँव के शमसान घाट पर जाकर थोड़ा दूर एक नीम के पेड़ के नीचे बैठकर ध्यान समाधि का अभ्यास करने लगे। ठीक समय पर शव यात्रा आई सैकड़ों लोगों के कोलाहल से समाधि टूट गई। भीड़ को देखकर उन्होंने पूछा कि यह क्या है? वह बिल्कुल भूल गये थे कि हम किसलिए आये हैं। उस भीड़ में से एक सज्जन ने बताया कि एक उच्च परिवार के बहुत ही अमीर व्यक्ति जो गाँव के सरपंच भी हैं उनकी सबसे प्रिय पुत्री का निधन हो गया है। लड़की का निधन सुनकर उन्हें आदेश याद आ गया। बोले सरपंच से कहो यदि हम उसे जिन्दा कर दें तो क्या हमारे साथ उस लड़की की शादी करेगा? उस सज्जन को थोड़ा अटपटा सा लगा कि यह सत्तर साल का बूढ़ा महात्मा क्या कह रहा है? लगता है यह महात्मा नहीं है। फिर उसने सोचा कि हो सकता है महात्माओं की शक्ति का कुछ पता नहीं चलता। लड़की को तो थोड़ी देर में फूँक ही देंगे जिन्दा रहेगी तो सब देखेंगे। उस सज्जन ने उनके घनिष्ट मित्र को यह बात बतायी स्वयं कहने का साहस नहीं हुआ क्योंकि वह बहुत ही सम्मानित व्यक्ति थे। सरपंच के मित्र ने महात्मा से जाकर कहा कि देख लो बाबा यदि लड़की जिन्दा नहीं हुई तो तुम्हे भी इसी के साथ फूँक दिया जायेगा। महात्मा बिगड़े कि जाकर उसके बाप से कहो। उस दुख के माहौल में उस मित्र ने दबे स्वर में महात्मा की बात बताई। वह राजी हो गया। महात्मा जी जाकर एक चिमटा मारा। बिगड़कर बोले उठ क्यों सो रही है? लड़की थोड़ी देर में उठकर बैठ गई। यह आश्चर्य जनक दृश्य देखकर सब लोग भय के मारे एक तरफ हट गये। पहले सब महात्मा जी को घेर कर खड़े थे कि यदि जिन्दा नहीं हुई तो

इन्हें भी फूँक देगें क्योंकि इतने बड़े आदमी का अपमान किया है। प्रभाव देखकर सब तालाब की काई की तरह एक तरफ हट गये। सभी विनम्रता पूर्वक हाथ जोड़कर नमन करने लगे तथा सभी उनके पीछे–पीछे चलने लगे। वह जाकर उसी नीम के पेड़ के नीचे बैठ गये। शर्त के अनुसार लड़की की शादी हुई। उसकी एक छोटी बहन थी वह भी साथ में रहने लगी तथा श्रद्धापूर्वक सेवा करने लगी।

कुछ दिन तक तो जगजीवन स्वामी झोपड़ी में ही रहे फिर लड़की के पिता ने एक अच्छा सा मकान गाँव के बाहर बनवा दिया, उसी में रहने लगे। ध्यान समाधि के क्रम में कोई कमी नहीं आई। कुछ समय बाद एक संतान पैदा हुई उसी दिन भगवान का आदेश मिला कि चलो यहाँ से संस्कार पूरा हो गया। वह सहज प्रसन्नता से वहाँ से चल पड़े। पंद्रहवें दिन भगवान ने कहा तुम्हारी निवृत्ति हो गई। अब तुम बन्धन मुक्त हो गये। इस आदेश से वह बहुत प्रसन्न हुए। अब साधना शेष हो गई। बाद में जगजीवन स्वामी के शिष्य शादी करने लगे। जबकि उन्हें ईश्वर का आदेश था तथा व्यवस्था भी ईश्वर ने किया। साधना के इस रहस्य को न समझने से प्रपंच में फँसने के कारण जगजीवन स्वामी के बाद उनके शिष्यों में कोई महापुरुष नहीं निकले। इसी प्रकार सभी संगठनों में महापुरुष की नकल करके वास्तविक सिद्धान्त से उनके अनुयायी दूर हो जाते हैं। महापुरुष के मूल सिद्धान्त का पालन नहीं कर पाते हैं।

मीरा ने भी एक परमात्मा के प्रति अटूट आस्था एवं समर्पण के साथ सतत् सुमिरन द्वारा वही स्थिति प्राप्त की जो सभी महापुरुषों ने पाई है।

परमाराध्य गुरुदेव पूज्य परमहंस जी महाराज ईश्वरीय निर्देशन एवं आकाशवाणी द्वारा प्राप्त आदेशानुसार ग्रह त्यागकर अपने गुरुदेव से साधना समझकर एकनिष्ठ होकर लग गये। थोड़े समय की साधना से पूर्व संस्कार के कारण इष्ट मार्गदर्शन करने लगे। इष्ट के निर्देशन में चलते हुए परमात्मभाव में स्थित हो गये। वह एक बात बहुत जोर देकर कहते थे कि त्याग, वैराग एवं अनुराग के साथ अहर्निश ईश्वर चिन्तन द्वारा ही दुखों से तथा आवागमन से छुटकारा सम्भव है। बिना इस क्रम के कोई भी दुखों से छुटकारा नहीं प्राप्त

कर सकता है।

पूज्य गुरुदेव भगवान भी यही कहते हैं कि मनुष्य कहीं भी पैदा हुआ हो कुछ भी कहलाता हो एक परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पित होकर सद्गुरु के हाथ का यंत्र बन जाय तो वह अनपढ़ या मूर्ख ही क्यों न हो जडभरत एवं कागभुसुण्ड की तरह सर्वोपरि विद्वान हो जायेगा, भगवान का प्रिय भक्त बन जायेगा।

संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं। चाहे वह कहीं भी हुए हो सबने एक परमात्मा की प्राप्ति ही सम्पूर्ण दुखों से छूटने का साधन बताया है तथा संसार के भोगों के प्रति आसक्ति को चाहे वह स्वर्ग से उत्तम ही क्यों न हो दुख का कारण बताया। किसी भी महापुरुष ने संसार के भोगों को प्राप्त करने का न आदेश दिया न समर्थन ही किया। यदि ऐसा करते तो वह श्रेष्ठ आदर्श एवं शुभ चिन्तक नहीं बन पाते क्योंकि संसार की प्रत्येक वस्तु, पद तथा धन नश्वर है। इनके नष्ट होने या बिछुड़ने में दुख होता है। दुख के मार्ग पर चलाने वाला तथा चलने वाला क्या शुभचिंतक हो सकता है? यही कारण था कि आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने अपने समस्त सौ पुत्रों को ईश्वर के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया तथा सभी शुभ चिन्तकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वह गुरु, गुरु नहीं, पिता, पिता नहीं, माता, माता नहीं, बन्धु, बन्धु नहीं, संबंधी, संबंधी नहीं जो आती हुई मौत से न बचा ले।

गुरुर्नस स्यात्स्व जनो न स स्यात्,
पिता न स स्यात्स्वजनीं न स स्यात्,
दैवं न तस्यान्न पतिश्च स स्वाश्न,
मोचयेद्यः समुपेत मृत्युम्।।

(भागवत महापुराणं स्क. 5/5/18)

यही बात अयोध्यावासियों ने कही–

जरइ सो सम्पति सदन सुख, सुहृद मातु पितु भाइ।
होत राम पद सन्मुख, सहस न करइ सहाइ।।

सभी महापुरुषों का एक ही लक्ष्य एक परमात्मा की प्राप्ति। एक ही उद्देश्य समस्त मानव जाति को सहृदयता के साथ सुख–शान्ति का मार्ग देना,

लेकिन उनके इस महान उपलब्धि एवं उद्देश्य को न समझने के कारण भोगों की दौड़ में आगे आने के लिए प्रत्येक महापुरुष के पीछे काल्पनिक सिद्धान्तों का जन्म हो गया। यही काल्पनिक सिद्धान्त वैमनस्यता एवं राग द्वेष का कारण बने। जिस कारण संघर्ष होते रहते हैं।

संसार के सभी महापुरुषों ने एक बात एक स्वर से स्वीकार किया है कि सद्गुरु से प्राप्त योग साधना में मन के एकाग्र होने से ईश्वर बाते करता है। ईश्वर निर्देशन देते हुए अपने भक्त को अपना धाम देता है। संसार के सभी भोगों का परिणाम दुःख है तथा ईश्वर प्राप्ति ही शाश्वत सुख का हेतु है। इसीलिए चक्रवर्ती सम्राट अशोक ने अपने एकलौते पुत्र तथा इकलौती पुत्री को सन्यास देकर स्वयं सन्यास ले लिया था। संसार के सभी महापुरुष कल्याण के मार्ग में एक मत है। सभी महापुरुषों का मानना है कि भोगों के प्रति आसक्ति दुःख का कारण है तथा ईश्वर की प्राप्ति सुख का कारण है। ईश्वर की प्राप्ति मन सहित सम्पूर्ण वृत्तियों को पूर्ण निरोध करने के बाद होती है। प्रत्येक महापुरुष ने अपने समय के बिखरे हुए समाज को उस समय की व्यवस्था एवं आवश्यकतानुसार नियम बनाकर तत्सामयिक समाज को मर्यादित एवं व्यवस्थित किया। इन सामाजिक नियमों को धर्म मान लेने से अनेकों मत–मतान्तरों का निर्माण हो गया। यह महापुरुषों का उद्देश्य कदापि नहीं था। उन्होंने क्या सोचा था, मनुष्य को क्या बनाना चाहा और वह क्या बन गया? यह देखकर स्वयं अनेकों तथा उनके सच्चे भक्तों को कष्ट एवं आश्चर्य अवश्य हो गया। महापुरुष सबको उन्नति के मार्ग पर चलाना चाहते थे, लेकिन सब अवनति के मार्गपर चल रहे हैं। महापुरुष सबको प्रसन्नता देना चाहते थे, लेकिन सभी अपने–अपने रोने का सामान जुटाने में व्यस्त हैं।

क्या बनाने आए थे, हम क्या बना बैठे।
कहीं मन्दिर बना बैठे कहीं मस्जिद बना बैठे।।
परिन्दों में फिरका परस्ती नहीं होती।
कभी मस्जिद पे जा बैठे कभी मन्दिर पे जा बैठे।।

ॐ सद्गुरुदेव भगवान की जय।

धर्म पशुवत् जीवन से निकाल कर तनाव रहित उच्चादर्श जीवन जीने को बाध्य करता है।

धर्मनिरपेक्ष कोई हो नहीं सकता!

भारत के सभी राजनीतिक प्रतिनिधि परिणाम को उपेक्षित कर धर्म–निरपेक्ष बनाने का प्रयास करते हैं, ताकि अधिक से अधिक जनमत को अपने पक्ष में करके सत्ता में काबिज हो सकें। इसके साथ ही प्रत्येक धार्मिक प्रतिनिधि भी अपने अपने धर्म को श्रेष्ठ समझकर तथा कहकर एक–दूसरे को हेय दृष्टि से देखते रहते हैं। क्या अपने आप को धर्मनिरपेक्ष कहने वाले तथा एक–दूसरे के धर्म को हेय दृष्टि से देखने वाले धर्म की परिभाषा जानते हैं?

जिस धर्म की रक्षा हेतु महाराणा प्रताप ने अपने भाई मानसिंह के साथ बैठकर भोजन नहीं किया, अपितु जंगल–जंगल भटककर घास की रोटियाँ खाना अच्छा समझा, जिस धर्म की रक्षा के लिए संत ज्ञानेश्वर के माता–पिता ने आत्महत्या की। जिस धर्म ने आदि शंकराचार्य को अपनी माँ के मृतक शरीर के टुकड़े–टुकड़े करके घर के पिछवाड़े ही दाह संस्कार करने पर विवश किया, जिस धर्म ने लाखों हिन्दू भाईयों को पारसी, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैन, कबीर पंथी इत्यादि अनेकों प्रकार की संकीर्णता में समेटकर सीमित कर दिया, जिस धर्म ने लाखों लोगों को अपने खून से अलग करके एक–दूसरे का कट्टर विरोधी बना दिया, जो धर्म छुआछूत जैसी अनेकों संकीर्णताओं में जीने के लिए मजबूर करता है, जिस धर्म ने लाखों लोगों को क्रूर बना डाला तथा जिस धर्म ने मानव जाति का इतना बड़ा ह्रास किया है, वह धर्म है क्या? इसे जानने के लिए आज तक किसी प्रतिनिधि ने प्रयास नहीं किया, जिस कारण विश्व में कहीं न कहीं किसी न किसी संकीर्णता को लेकर झगड़े होते ही रहते हैं। यदि झगड़ा करने वालों से पूछा जाये कि ऐसा करके आप मनुष्यों को क्या देना चाहते हैं? क्या एक–दूसरे के ऊपर अपने कल्पित सिद्धान्त एवं विचारधारा को शक्ति एवं षड़यन्त्र के बल पर थोपकर किसी को सुख–शान्ति दे सकते हैं?

परम्पराओं के पालन से कभी किसी को सुख–शान्ति न मिली है न

धार्मिक व्यक्ति क्रूर नहीं होता, क्रूर व्यक्ति धार्मिक नहीं होता, रात एवं दिन की तरह एक साथ यह दोनों विपरीत बातें नहीं हो सकतीं, यह दोनों विपरीत धारणाऐं हैं, एक साथ एक व्यक्ति के पास नहीं हो सकतीं। क्या बिना क्रूरता के कोई नृशंस हत्या कर सकता है?

कभी मिल सकती है। प्रत्येक कबीले की अपनी परम्परा है। पृथ्वी पर लाखों कबीले हैं। इस प्रकार लाखों परम्पराएँ हैं। समयानुसार परम्पराएँ मिटती रहती हैं उसकी जगह दूसरी परम्परा आ जाती है। यह सिलसिला तब तक चलता रहेगा जब तक मानव जाति रहेगी, लेकिन धर्म अनादिकाल से एक था। जब तक सृष्टि रहेगी तब तक धर्म एक ही रहेगा। सृष्टि के न रहने पर भी धर्म रहेगा। वह धर्म है परमात्मा ''धारयति इति धर्मः'' जो सबको धारण करता है वही धर्म है। ऐसा एक मात्र परमात्मा है जो सम्पूर्ण जगत को धारण करता है।

योगेश्वर श्रीकृष्ण ने कहा है कि अर्जुन! सम्पूर्ण जगत को धारण करके मैं एक जगह स्थित हूँ इस कथन के बाद अर्जुन ने स्वयं देखा। तत्पश्चात् कहा कि आपका अव्यक्त स्वरूप ही शाश्वत धर्म है। गोपनीयों में भी अत्यन्त गोपनीय है। आप ही सनातन पुरुष हैं। ऐसा मेरा दृढ़ निश्चय है।

त्वमव्ययः शाश्वत धर्म गोप्ता।
सनातनस्त्वं पुरुषों मतो में।।

अ0 11/18

संसार में ईश्वर एक है इसलिए सम्पूर्ण मानव जाति का धर्म एक है। इतना स्पष्ट होने के बाद भी क्षणिक लाभ एवं स्वार्थवश अत्यन्त बुद्धिजीवी प्रतिनिधि भी धर्म को राजनीतिक रंग देकर समाज को दिशा–विहीन करके मानव जाति के बीच धार्मिक संघर्ष को बनाए रखकर अपनी कुर्सी सुरक्षित रखने का कुप्रयास करता रहता है। क्या किसी की कुर्सी एवं उपलब्धि सदैव सुरक्षित रही है? कुर्सी छूटने के बाद उपलब्धियाँ नष्ट होने के बाद प्रतिनिधियों के हाथ क्या लगेगा? भारत के प्रतिनिधियों की ऐसी सोच कभी नहीं थी। उन्होंने समूची मानव जाति के बीच उत्पन्न मतभेदों को मिटाकर उनके दिलों पर शासन किया है, उनके हृदय में स्थान बनाया है। जिसके फलस्वरुप आज लाखों हजारों वर्ष बाद भी उनके गीत श्रद्धा से गाकर उन्हें आज भी उतने ही सम्मान से याद किया जाता है, जितना अपने शासनकाल में लोग उन्हें सम्मान से याद करते थे।

आज अपने को धर्म–निरपेक्ष कहने वाले सभी प्रतिनिधि क्या जाति पक्ष से अलग कर सकते हैं? भारत में जितनी जातियाँ हैं, वह किसी न किसी धर्म परम्परा से जुड़ी हैं। क्या भारत में कोई ऐसी जाति है जिसका किसी धर्म परम्परा से सम्बन्ध नहीं है? जातियों के पक्षधर प्रतिनिधि क्या जाति निरपेक्ष हो सकते हैं? जो जाति निरपेक्ष नहीं हो सकता वह धर्म निरपेक्ष भी नहीं हो सकता। प्रत्येक जाति किसी न किसी धर्म परम्परा से जुड़ी है और इन जातियों की पैरवी करने वाले प्रतिनिधि अपने आपको धर्म निरपेक्ष कहने का

साहस भी जुटा लेते हैं। ऐसा कहने वाले प्रतिनिधियों की समझदारी एवं विद्वता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। यह बात तो समाज एवं धार्मिक तथा राजनीतिक प्रतिनिधियों की मान्यता के आधार पर कही गई है। सभी प्रतिनिधि भारत की भोली–भाली जनता को सत्य से कब तक दूर रखेंगे? क्या प्रतिनिधियों का यही धर्म एवं कर्तव्य शेष रह गया है?

सम्पूर्ण सृष्टि का धर्म एक है और वह है परमात्मा। इस सत्य को संसार के सभी महापुरुषों ने स्वीकार किया है। स्थान एवं जलवायु भेद से परम्परायें अनेक हैं, इनकी पैरवी तथा सुरक्षा में उठाया गया कदम मनुष्यों की विद्वता एवं दूरदर्शिता को स्पष्ट करता है। क्योंकि विश्व की कोई भी परम्परा स्थाई नहीं है। धर्म स्थाई है, स्थिर है, व्यापक है, शाश्वत है तथा सनातन है। जो नश्वर है उसे बनाए रखने के लिए रक्तपात का या किसी प्रकार के षड़यन्त्र का सहारा लेना कितना उचित है, कितनी समझदारी है। इनके लिए अपने आपको पक्ष–विपक्ष एवं निरपेक्ष सीमाओं में बाँधना कहाँ तक उचित है, कितनी बुद्धिमानी है? सत्य से अनभिज्ञ समाज को कब तक दुर्नीतियों का सहारा लेकर भ्रमित किया जा सकता है? वास्तविकता से परिचित होने पर क्या समाज हमें एवं हमारी संतति को कभी क्षमा कर पायेगा?

इसलिये वास्तविक धर्म की परिभाषा को किसी योगेश्वर श्रीकृष्ण जैसे तत्वदर्शी महापुरुष से समझने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि ऐसे महापुरुष प्रत्येक सामाजिक संकीर्णता से दूर होते हैं तथा उनका उपदेश भी प्रत्येक संकीर्णता से मुक्त होता है। वह समाज की प्रत्येक कलुषित एवं सकीर्ण भावना को धोने में तथा मिटाने में समर्थ होता है।

सम्पूर्ण मानव जाति का धर्म एक है। धर्म के लिए धर्म निरपेक्ष जैसा शब्द प्रयोग करके विद्वान अपनी मानसिक संकीर्णता का ही परिचय देते हैं। धर्म निरपेक्ष शब्द से विद्वानों का कोई व्यक्तिगत स्वार्थ हो सकता है, इससे मानव जाति का कभी कोई हित सम्भव नहीं हैं। जिस विचार से, सिद्धान्त से, नियम से मनुष्य–मनुष्य में दूरी पैदा होती है, कटुता बढ़ती है, क्या ऐसे विचारों, सिद्धान्तों एवं नियमों को मानव हित में कहना उचित होगा? मनुष्य–मनुष्य में दूरी पैदा करने वाले लोग मानव जाति के लिए कितना उपयोगी हो सकते हैं? ऐसे संकीर्ण विचार वालों का संदेश समाज के लिए कितना हितग्राह्य हो सकता है इस पर समूची मानव जाति को तथा देश का हित एवं विकास चाहने वाले मानव हित में तत्पर लोगों को भली प्रकार विचार करना चाहिए। जिस भावना से, जिस सिद्धान्त से मानव जाति की समस्याएँ

एवं दूरियाँ कम हों तथा इन्हें निर्मूल किया जा सके उसी को महत्व देकर मानव जाति के सच्चे हितैषी के रुप में अपना परिचय दें। इससे श्रेष्ठ उपलब्धि और मनुष्य के लिए क्या हो सकती है? सकीर्ण एवं कलुषित भावना वालों से मानव जाति को क्या प्रेरणा मिल सकती है, ऐसे लोगों द्वारा समाज का कितना हित हो सकता है, इस पर भी सबको विचार करना चाहिए क्योंकि भली प्रकार विचार करके रखा हुआ प्रत्येक कदम मील का पत्थर साबित हो सकता है। नहीं तो –

बिना विचारै जो करै सो पाछे पछताय।
काम बिगारै आपनो जग में होत हसाय।।

धर्म एक है, परम्परायें अनेक हैं। एक दूसरे के हितों को ध्यान में रखते हुए सबको अपनी–अपनी परम्परा में जीने का अधिकार है। संसार की कोई भी परम्परा श्रेष्ठ एवं अश्रेष्ठ नहीं होती क्योंकि प्रत्येक परम्परा का परिणाम दुःख है।

प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी परम्परा से जुड़ा है। प्रत्येक मनुष्य के पास जो भी उपलब्धि है वह उसने अपने परम्परा में रहकर ही प्राप्त की है। मनुष्य की कोई वस्तु स्थिर एवं टिकाऊ नहीं है। मनुष्य ने जो जीवनपर्यन्त अर्जित किया है यदि उसमें से कुछ नष्ट होगा तो क्या उसे खुशी होगी? उसे दुःख निश्चित होगा। इसलिये संसार की प्रत्येक परम्परा का तथा उसमें रहकर प्राप्त की हुई उपलब्धि का एक दिन अंत निश्चित है, जिसके अंत में दुःख निश्चित है, जिसका अंत निश्चित है, अंत में दुःख निश्चित है। ऐसी परम्पराओं के लिए तथा ऐसी उपलब्धि के लिए आपस में एक–दूसरे को षड़यन्त्र का शिकार बनाकर एक दूसरे की परम्पराओं पर काबिज होने के प्रयास को कितना उचित एवं समझदारी से रखा हुआ कदम समझा जाय? क्या प्रतिनिधि वर्ग मानव हितों को ध्यान में रखते हुए अपनी संकीर्ण मानसिकता का परित्याग कर एक स्वच्छ समाज का निर्माण करके जिसमें किसी प्रकार की कोई संकीर्णता नहीं अपने महान पूर्वजों के गौरव में वृद्धि करके उसे सुरक्षित रखने का प्रयास एवं साहस कर सकेंगे?

यदि छुआछूत ही धर्म है तो हमें विचार करना चाहिए कि आज देश में कोई भी हिन्दु नहीं है। क्योंकि आज प्रत्येक सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक समारोहों तथा होटलों में सभी जाति एवं परम्पराओं को मानने वाले साथ–साथ खाना बनाते एवं खाते हैं। छुआछूत के परिणामस्वरुप आज हिन्दु समाज काफी सिकुड़ गया। इस पर बुद्धिजीवीयों को विचार करना चाहिए कि वास्तविक धर्म क्या है। संसार का कोई भी व्यक्ति वास्तविक धर्म जानने के

योग-दर्शन :

सर्वमान्य शास्त्र महर्षि पातंजलि कृत योग-दर्शन की यथार्थ व्याख्या जो योग के वास्तविक स्वरूप से अवगत कराती है जो कि साधनगम्य है। यह क्रियात्मक पथ पर चलने के लिए मार्गदर्शिका है।

लेखक : स्वामी बज्रानन्द जी महाराज

भाषायें : हिन्दी एवं इंगलिश

सबका धर्म एक है:

सम्पूर्ण मानव का धर्म एक है, सम्पूर्ण विश्व का मानव एक है, सम्पूर्ण विश्व का ईश्वर एक है, ईश्वर प्राप्ति का मार्ग एक है, विश्व के सभी महापुरूषों ने यही संदेश दिया है। जिसका क्रमिक चित्रण घटनाओं के माध्यम से इस पुस्तक में किया गया है।

लेखक : स्वामी बज्रानन्द जी महाराज

भाषायें : हिन्दी एवं इंगलिश

सुधात्रयी:

साधना एवं जीवन में सफलता के लिए महत्वपूर्ण संदेशों का संकलन इस पुस्तक में अड़गड़ मणिमाला के रूप में किया गया है जिसको आचरण में लाकर मनुष्य परमात्मा का कृपापात्र बन जाता है।

लेखक : स्वामी बज्रानन्द जी महाराज

भाषायें : हिन्दी एवं इंगलिश

कुंभ पर्व एवं शिवतत्व:

कुंभ एक विराट पर्व ही नहीं बल्कि वास्तविक जीवन दर्शन है वह अमृत कुंभ कैसे और कहाँ प्राप्त होगा इस पुस्तक के माध्यम से बताया गया है

लेखक : स्वामी बज्रानन्द जी महाराज

भाषायें : हिन्दी एवं इंगलिश

भक्तिधारा:

भक्ति जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि है। उस पथ में हम कैसे आगे बढ़ सकते हैं और पूर्व में हुऐ भक्तों ने कैसे परमात्मा की भक्ति प्राप्त की। इस पुस्तक के माध्यम से हम जानकर जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि प्राप्त करने के योग्य बन सकते हैं।

लेखक : स्वामी बज्रानन्द जी महाराज

भाषायें : हिन्दी

चिन्तनधारा:

विश्व की सभी समस्याओं का समाधान महापुरूषों के मार्ग पर चलकर प्राप्त किया जा सकता है। इसी क्रम में मानव की मूलभूत समस्याओं के समाधान हेतु यह पुस्तक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

लेखक : स्वामी बज्रानन्द जी महाराज

भाषायें : हिन्दी

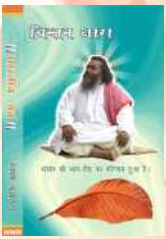

सभी पुस्तके आप हमारी बेबसाईट www.yatharthsandesh.com पर ऑनलाइन भी आर्डर कर सकते हैं।

यदि गीता को धर्मशास्त्र के रूप में मान्यता मिल जाती है

- अनेकों धार्मिक संस्थाओं द्वारा भ्रामक प्रचार करके लोगों को गुमराह करने का अवसर नहीं मिलेगा, क्योंकि गीता एक धर्म का बोध कराती है।
- जिन कारणों से मानव-मानव के बीच मतभेद जनित दूरियां बढ़ी हैं, वह सदैव के लिए समाप्त हो जाएगी।
- सम्पूर्ण मानव जाति एक ईश्वर की संतान है गीता इसका भली प्रकार बोध करा कर भेदभाव से उत्पन्न अनेकों प्रकार के संघर्ष से होने वाली विभिन्न प्रकार की क्षति में विराम लगा देगी।
- जिसमें मनुष्य का सर्वथा पतन है, ऐसी किसी भी प्रकार की संकीर्ण मानसिकता को बढावा देने का तथा अपनाने का कभी किसी को अवसर नहीं मिलेगा, क्योंकि गीता प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन एवं कर्तव्य के प्रति आश्वस्त करते हुए शाश्वत एवं अनन्त जीवन प्रदान करती है।
- गीता में किसी भी प्रकार की मानवीय दुर्बलताओं को कोई स्थान नहीं है, जो मनुष्य के सामने अनेकों प्रकार की समस्यायें एवं संकट उत्पन्न करती है, अतः मनुष्य स्वतः समस्याओं से छुटकारा पा जायेगा, क्योंकि गीता कथन पर नहीं अपितु कर्म पर विश्वास दिलाती है।
- धार्मिक, सामाजिक पारम्परिक एवं राजनीतिक संकीर्णता से ऊपर उठाकर सम्पूर्ण मानव जाति को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है तथा प्रत्येक व्यक्ति को उसके वास्तविक जीवन से परिचित कराया जा सकता है।
- धार्मिक भ्रांति एवं पारम्परिक संकीर्णता के कारण कहीं न कहीं खूनी संघर्ष होते रहते हैं, जिस कारण अपूर्ण जन-धन-हानि होती है, हजारों साल से चला आ रहा यह सिलसिला खत्म हो जायेगा, प्रत्येक व्यक्ति एवं प्रतिनिधि का जीवन सुरक्षित एवं व्यवस्थित हो जायेगा।
- मानव जाति के बीच व्याप्त अनेक प्रकार की संकीर्णता के कारण देश के प्रतिनिधियों को असमय खोना पड़ता है, एक दूसरे के षडयन्त्र का शिकार बनना पड़ता है। जिसे सभी देशवासी एक अपूर्णनीय क्षति मानते हैं। इन सब पर विराम लग जायेगा, क्योंकि गीतोक्त साधन निर्दोष जीवन प्रदान करता है, चाह कर भी कोई समाज में किसी प्रकार की दरार नहीं डाल सकता है, क्षति नहीं पहुंचा सकता है।

स्वामी श्री बज्रानन्दजी महाराज

- गीता सम्पूर्ण मानव जाति की सम्पूर्ण समस्याओं का एक पूर्ण समाधान है, यह मानव जाति के बीच दूरी को मिटाकर एक सत्य का बोध कराती है।
- गीता पांच हजार वर्ष से अधिक भगवान श्री कृष्ण के मुख से निकली हुई अमरवाणी है। इससे पूर्व विश्व के किसी संत एवं दार्शनिक ने ईश्वर के संबंध में तथा मानव कल्याण के विषय में कुछ भी नहीं कहा है, संसार में प्रचलित सभी धर्म शास्त्रों से यदि एक परमात्मा की चर्चा निकाल दी जाये तो समाज को देने के लिए उसके पास दुःख के अतिरिक्त कुछ भी नहीं बचेगा। प्रचलित सभी धर्म एवं धर्मशास्त्र गीता के बाद के हैं गीता एक परामात्मा में विश्वास दिलाती है तथा उसी में सम्पूर्ण मानव जाति का परम कल्याण निहित है, इसलिये गीता सम्पूर्ण मानव जाति का अतर्क्य धर्मशास्त्र है, साथ ही सम्पूर्ण धर्म शास्त्रों का अकेले ही प्रतिनिधित्व भी करती है क्योंकि सभी धर्मशास्त्र गीता की प्रतिध्वनि मात्र है।

विचारणीय बिन्दु

✍ धर्म विनाश नहीं सृजन करता है, नम्रता पैदा करता है, सहानुभूति रखता है, स्मृति प्रदान करता है, सुख देता है, समत्व प्रदान करता है, राग द्वेष से दूर रखता है, भेद-भाव की दीवार को तोड़ता है एवं धर्म को भाषा, भेद, समूह भाव, सम्प्रदाय, मजहब एवं जाति में नहीं बाँधा जा सकता है। धर्म सबसे अतीत एवं असीम है, जो धार्मिक होता है उसके पास ये सभी गुण अपने आप आ जाते हैं।

✍ विश्व में धर्म के नाम पर अथवा समाज-सुधार के नाम पर जितने भी संगठन हैं क्या उनके प्रतिनिधियों या उनसे सम्बन्धित समाज के किसी भी व्यक्ति के पास सुख शान्ति हैं? यदि नहीं है तो समाज का विकास करके आप उसे क्या दे रहे हैं, थोड़ा धार्मिक संगठन वाले विचार करें कि जब परमात्मा सब जगह सामन रूप से व्याप्त है तो फिर अपने-अपने संगठन की बढ़ाई क्यों करते है? जिसकी वे निन्दा करते हैं क्या वहाँ परमात्मा नहीं है? कोरी व्याख्यानबाजी से आज तक न किसी को सुख-शान्ति मिली है और न मिलेगी। समाज के प्रत्येक प्रतिनिधि का प्रथम दायित्व है कि भेद-भाव अपने पराये की संकीर्णता से समाज को मुक्त कराके संतों के मूल सिद्धान्तों पर चलकर विकास एवं एकता की परिसीमा तक पहुँचकर महानता का बीजारोपण करें। जब तक सन्त सेवित मार्ग का आश्रय हम नहीं लेंगे तब तक किसी संगठन में शामिल हो जायें सुख शान्ति नहीं मिलेगी।

✍ परम्पराऐं मनुष्य को गुलाम बनाती हैं, अनादि काल से लोग परम्पराओं से चिपके आ रहे हैं, आजीवन परम्पराओं का पालन करके भी दुख के सिवाय कुछ नहीं मिलता, संसार में मनुष्य किसी न किसी परम्परा का अनुयायी है, एक-दूसरे की परम्परा में लोग शामिल होते ही रहते हैं, जिसे आपकी भाषा में धर्म परिवर्तन कहते हैं। आप जिस परम्परा में शामिल होने जा रहे हैं क्या उस परम्परा के लोगों में सुख-शान्ति है। जिस दवा से रोग नहीं जाता है वह दवा व्यर्थ समझी जाती है। जिस परम्परा के पालन से सुख-शान्ति नहीं मिलती वह परम्परा व्यर्थ है।

✍ प्रत्येक महापुरूष ने परम कल्याण का एक ही संदेश दिया लेकिन पीछे से अनुयायियों ने महापुरूषों के नाम पर छोटे-छोटे संगठन बना लिए। इन्हीं संगठनों ने आगे चलकर सम्प्रदाय एवं जाति का रूप ले लिया। यदि जातीय व्यवस्था एवं साम्प्रदायिक व्यवस्था से सुख शान्ति मिलती तो संत इसका समर्थन अवश्य करते और हमें सुख शान्ति मिलती भी। लेकिन विश्व में महापुरूषों के नाम पर जितने संगठन हैं, सम्प्रदाय हैं, जातियाँ हैं कोई सुखी नहीं है और ना ही इन संकीर्णताओं में कभी किसी महापुरूष ने इसका समर्थन किया। सारे विश्व में कल्याण का साधन मात्र इतना ही है कि एक परमात्मा में अटूट श्रद्धा, तत्वदर्शी सद्गुरू के स्वरूप का ध्यान, सेवा एवं दो ढाई अक्षर का नाम जप, नियमित रूप से यदि सुबह शाम किया। संयम के साथ क्रिया पार लग गई जिसका नाम परमात्मा है, खुदा है, गॉड है, साहब है या अहूर मज्दा है, ४ या ६ महीने में ही आपके हृदय से रथी होकर पंथ संचालन करने लगेंगे। संचालन करते-करते अपने धाम तक पहुँचा देंगे। अपना स्वरूप प्रदान कर देंगे।

-स्वामी बजानन्द

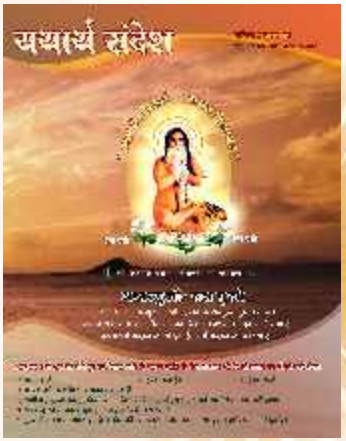

आपके जीवन में बहुत सी बातें होंगी जिन्हें अपने प्रियजनों व इष्ट मित्रों में बांटकर आपको हार्दिक आनन्द की अनुभूति हुई होगी उन्होंने भी आपके लिए ऐसा ही कुछ किया होगा। आपको अपने जीवन में सबसे अमूल्य भेंट जो प्राप्त हुई है। वह है सद्गुरू की कृपा। ऐसी दिव्य गुरूकृपा को अनवरत आप तक पहुँचाने में 'यथार्थ सन्देश' एक सुन्दर माध्यम हो सकती है। ऐसी कृपा के माध्यम को आप किसी भी अवसर पर अपने स्वजनों तक पहुँचा सकें, उनके लिए इस अभिलाषा को प्रकट रूप देने का आपके लिए यह एक सुन्दर अवसर है। अतः आप अपने स्वजनों के नाम नीचे लिखित सदस्यता फार्म में भरकर, वार्षिक अथवा आजीवन शुल्क सहित हमें भेज सकते हैं अथवा

www.yatharthsandesh.com
पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

सदस्यता फार्म

Sr. No :

मैं 'यथार्थ सन्देश' का सदस्य बनना चाहता हूँ।

मैंने रूपये ..... 'भारतीय संस्कृति सुरक्षा एवं मानव कल्याण समिति ;ट्रस्टद्ध, अलीगढ़' के नाम से डी.डी. / कैश या एम.ओ. नम्बर ..... दिनांक..... बैंक..... संलग्न किया है।

❑ *1 वर्ष* **Rs.200/-** ❑ *5 वर्ष* **Rs.900/-**

पूरा नाम .....

जन्म तिथि .....पता .....

.....ग्राम ..... पोस्ट .....

षहर .....राज्य ..... पिन .....

मोबाइल .....ई-मेल .....

Cash Received By : .....

कृपया अपना डी.डी. या एम.ओ., भारतीय संस्कृति सुरक्षा एवं मानव कल्याण समिति (ट्रस्ट) के नाम से 3/294, सूरज विहार, लक्ष्मी बाई मार्ग, रामघाट रोड, अलीगढ़ 202001 के पते पर भेजें। अथवा **www.yatharthsandesh.com** पर ऑनलाइन आवेदन करे अथवा सम्पर्क करें ईमेल : **yatharthsandesh@gmail.com**, Mobile : **9412757091, 8989878800**